Hindi Easy-to-Read Version

Language: हिन्दी (Hindi)
Provided by: Bible League International.

Copyright and Permission to Copy

Taken from the Hindi Easy-to-Read Version © 1995 by Bible League International.
PDF generated on 2017-08-22 from source files dated 2017-08-22.
a28f7793-64e5-53d1-b0c7-eb243e526a41
ISBN: 978-1-5313-1305-0

नीतिवचन

१ दाऊद के पुत्र और इस्राएल के राजा
सुलैमान के नीतिवचन। यह शब्द इसलिये
लिखे गये हैं, २ ताकि मनुष्य बुद्धि को पाये,
अनुशासन को ग्रहण करे, जिनसे समझ भरी
बातों का ज्ञान हो, ३ ताकि मनुष्य विवेकशील,
अनुशासित जीवन पाये, और धर्म—पूर्ण, न्याय—
पूर्ण, पक्षपातरहित कार्य करे, ४ सरल सीधे जन को
विवेक और ज्ञान तथा युवकों को अच्छे बुरे का भेद
सिखा (बता) पायें। ५ बुद्धिमान उन्हें सुन कर निज
ज्ञान बढ़ावें और समझदार व्यक्ति दिशा निर्देश
पायें, ६ ताकि मनुष्य नीतिवचन, ज्ञानी के दृष्टाँतों
को और पहेली भरी बातों को समझ सकें।

७ यहोवा का भय मानना ज्ञान का आदि है किन्तु
मूर्ख जन तो बुद्धि और अनुशासन को तुच्छ
मानते हैं।

विवेकपूर्ण बनो चेतावनी : प्रलोभन से बचो

८ हे मेरे पुत्र, अपने पिता की शिक्षा पर ध्यान
दे और अपनी माता की नसीहत को मत भूल। ९ वे
तेरा सिर सजाने को मुकुट और शोभायमान करने
तेरे गले का हार बनेंगे।

१० हे मेरे पुत्र, यदि पापी तुझे बहलाने फुसलाने
आयें उनकी कभी मत मानना। ११ और यदि वे कहें,
"आजा हमारे साथ! आ, हम किसी के घात में
बैठे! आ निर्दोष पर छिपकर वार करें! १२ आ, हम
उन्हें जीवित ही सारे का सारा निगल जायें वैसे ही
जैसे कब्र निगलती हैं। जैसे नीचे पाताल में कहीं
फिसलता चला जाता है। १३ हम सभी बहुमूल्य
वस्तुयें पा जायेंगे और अपने इस लूट से घर भर
लेंगे। १४ अपने भाग्य का पासा हमारे साथ फेंक,
हम एक ही बटुवे के सहभागी होंगे!"

१५ हे मेरे पुत्र, तू उनकी राहों पर मत चल, तू
अपने पैर उन पर रखने से रोक। १६ क्योंकि उनके
पैर पाप करने को शीघ्र बढ़ते, वे लहू बहाने को
अति गतिशील हैं।

१७ कितना व्यर्थ है, जाल का फैलाना जबकि
सभी पक्षी तुझे पूरी तरह देखते हैं। १८ जो किसी
का खून बहाने प्रतीक्षा में बैठे हैं वे अपने आप
उस जाल में फँस जायेंगे! १९ जो ऐसे बुरे लाभ के
पीछे पड़े रहते हैं उन सब ही का यही अंत होता
है। उन सब के प्राण हर ले जाता है; जो इस बुरे
लाभ को अपनाता है।

चेतावनी : बुद्धिहीन मत बनो

२० बुद्धि! तो मार्ग में ऊँचे चढ़ पुकारती है,
चौराहों पर अपनी आवाज़ उठाती है। २१ शोर भरी
गलियों के नुक्कड़ पर पुकारती है, नगर के फाटक
पर निज भाषण देती है:

२२ "अरे भोले लोगों! तुम कब तक अपना मोह
सरल राहों से रखोगे? उपहास करनेवालों, तुम कब
तक उपहासों में आनन्द लोगे? अरे मूर्खो, तुम कब
तक ज्ञान से घृणा करोगे? २३ यदि मेरी फटकार तुम
पर प्रभावी होती तो मैं तुम पर अपना हृदय उंडेल
देती और तुम्हें अपने सभी विचार जना देती।

२४ "किन्तु क्योंकि तुमने तो मुझको नकार दिया
जब मैंने तुम्हें पुकारा, और किसी ने ध्यान न दिया,
जब मैंने अपना हाथ बढ़ाया था। २५ तुमने मेरी
सब सम्मत्तियाँ उपेक्षित कीं और मेरी फटकार
कभी नहीं स्वीकारीं! २६ इसलिए, बदले में, मैं तेरे
नाश पर हसूँगी। मैं उपहास करूँगी जब तेरा
विनाश तुझे घेरेगा! २७ जब विनाश तुझे वैसे ही
घेरेगा जैसे भीषण बबूले सा बवण्डर घेरता है, जब
विनाश जकड़ेगा, और जब विनाश तथा संकट
तुझे डुबो देंगे।

२८ "तब, वे मुझको पुकारेंगे किन्तु मैं कोई भी
उत्तर नहीं दूँगी। वे मुझे ढूँढते फिरेंगे किन्तु नहीं
पायेंगे। २९ क्योंकि वे सदा ज्ञान से घृणा करते रहे,
और उन्होंने कभी नहीं चाहा कि वे यहोवा से
डरें। ३० क्योंकि वे, मेरा उपदेश कभी नहीं धारण
करेंगे, और मेरी ताड़ना का तिरस्कार करेंगे। ३१ वे
अपनी करनी का फल अवश्य भोगेंगे, वे अपनी
योजनाओं के कुफल से अघायेंगे!

३२ "सीधों की मनमानी उन्हें ले डूबेगी, मूर्खों का
आत्म सुख उन्हें नष्ट कर देगा। ३३ किन्तु जो मेरी
सुनेगा वह सुरक्षित रहेगा, वह बिना किसा हानि
के भय से रहित वह सदा चैन से रहेगा।"

बुद्धि के नैतिक लाभ

२ १ हे मेरे पुत्र, यदि तू मेरे बोध वचनों को
ग्रहण करे और मेरे आदेश मन में संचित
करे, २ और तू बुद्धि की बातों पर कान लगाये,
मन अपना समझदारी में लगाते हुए ३ और यदि
तू अन्तर्दृष्टि के हेतु पुकारे, और तू समझबूझ के
निमित्त चिल्लाये, ४ यदि तू इसे ऐसे ढूँढे जैसे कोई
मूल्यवान चाँदी को ढूँढता है, और तू इसे ऐसे ढूँढ,
जैसे कोई छिपे हुए कोष को ढूँढता है ५ तब तू
यहोवा के भय को समझेगा और परमेश्वर का ज्ञान
पायेगा।

६ क्योंकि यहोवा ही बुद्धि देता है और उसके
मुख से ही ज्ञान और समझदारी की बातें फूटती
है। ७ उसके भंडार में खरी बुद्धि उनके लिये रहती
जो खरे हैं, और उनके लिये जिनका चाल चलन
विवेकपूर्ण रहता है। वह जैसे एक ढाल है। ८ न्याय
के मार्ग की रखवाली करता है और अपने भक्तों
की वह राह संवारता है।
९ तभी तू समझेगा की नेक क्या है, न्यायपूर्ण
क्या है, और पक्षपात रहित क्या है, यानी हर भली
राह। १० बुद्धि तेरे मन में प्रवेश करेगी और ज्ञान
तेरी आत्मा को भाने लगेगा।
११ तुझको अच्छे—बुरे का बोध बचायेगा,
समझ बूझ भरी बुद्धि तेरी रखवाली करेगी,
१२ बुद्धि तुझे कुटिलों की राह से बचाएगी जो
बुरी बात बोलते हैं। १३ अंधेरी गलियों में आगे बढ़
जाने को वे सरल—सीधी राहों को तजते रहते हैं।
१४ वे बुरे काम करने में सदा आनन्द मनाते हैं, वे
पापपूर्ण कर्मों में सदा मग्न रहते हैं। १५ उन लोगों
पर विश्वास नहीं कर सकते। वे झूठे हैं और छल
करने वाले हैं। किन्तु तेरी बुद्धि और समझ तुझे
इन बातों से बचायेगी।
१६ यह बुद्धि तुझको वेश्या और उसकी
फुसलाती हुई मधुर वाणी से बचायेगी। १७ जिसने
अपने यौवन का साथी त्याग दिया जिससे वाचा
कि उपेक्षा परमेश्वर के समक्ष किया था। १८ क्योंकि
उसका निवास मृत्यु के गर्त में गिराता है और
उसकी राहें नरक में ले जाती हैं। १९ जो भी निकट
जाता है कभी नहीं लौट पाता और उसे जीवन की
राहें कभी नहीं मिलती!
२० अत: तू तो भले लोगों के मार्ग पर चलेगा और
तू सदा नेक राह पर बना रहेगा। २१ क्योंकि खरे
लोग ही धरती पर बसे रहेंगे और जो विवेकपूर्ण हैं
वे ही टिक पायेंगे। २२ किन्तु जो दुष्ट है वे तो उस
देश से काट दिये जायेगें।

उत्तम जीवन से संपन्नता

३ १ हे मेरे पुत्र, मेरी शिक्षा मत भूल, बल्कि तू
मेरे आदेश अपने हृदय में बसा ले। २ क्योंकि
इनसे तेरी आयु वर्षों वर्ष बढ़ेगी और ये तुझको
सम्पन्न कर देगें।
३ प्रेम, विश्वसनीयता कभी तुझको छोड़ न
जाये, तू इनका हार अपने गले में डाल, इन्हें अपने
मन के पटल पर लिख ले। ४ फिर तू परमेश्वर और
मनुष्य की दृष्टि में उनकी कृपा और यश पायेगा।
५ अपने पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रख!
तू अपनी समझ पर भरोसा मत रख। ६ उसको
तू अपने सब कामों में याद रख। वही तेरी सब
राहों को सीधी करेगा। ७ अपनी ही आँखों में तू
बुद्धिमान मत बन, यहोवा से डरता रह और पाप
से दूर रह। ८ इससे तेरा शरीर पूर्ण स्वस्थ रहेगा
और तेरी अस्थियाँ पुष्ट हो जायेंगी।
९ अपनी सम्पत्ति से, और अपनी उपज के पहले
फलों से यहोवा का मान कर। १० तेरे भण्डार ऊपर
तक भर जायेंगे, और तेरे मधुपात्र नये दाखमधु
से उफनते रहेंगे।
११ हे मेरे पुत्र, यहोवा के अनुशासन का
तिरस्कार मत कर, उसकी फटकार का बुरा कभी
मत मान। १२ क्यों क्योंकि यहोवा केवल उन्हीं को
डाँटता है जिनसे वह प्यार करता है। वैसे ही जैसे
पिता उस पुत्र को डाँटे जो उसको अति प्रिय है।
१३ धन्य है वह मनुष्य, जो बुद्धि पाता है। वह
मनुष्य धन्य है जो समझ प्राप्त करें। १४ बुद्धि,
मूल्यवान चाँदी से अधिक लाभदायक है, और वह
सोने से उत्तम प्रतिदान देती है! १५ बुद्धि मणि
माणिक से अधिक मूल्यवान है। उसकी तुलना
कभी किसी उस वस्तु से नहीं हो सकती है जिसे
तू चाह सके!
१६ बुद्धि के दाहिने हाथ में सुदीर्घ जीवन है,
उसके बायें हाथ में सम्पत्ति और सम्मान है।
१७ उसके मार्ग मनोहर हैं और उसके सभी पथ
शांति के रहते हैं। १८ बुद्धि उनके लिये जीवन वृक्ष
है जो इसे अपनाते हैं, वे सदा धन्य रहेंगे जो दृढ़ता
से बुद्धि को थामे रहते हैं!
१९ यहोवा ने धरती की नींव बुद्धि से धरी, उसने
समझ से आकाश को स्थिर किया। २० उसके ही
ज्ञान से गहरे सोते फूट पड़े और बादल ओस कण
बरसाते हैं।
२१ हे मेरे पुत्र, तू अपनी दृष्टि से भले बुरे का
भेद और बुद्धि के विवेक को ओझल मत होने दे।
२२ वे तो तेरे लिये जीवन बन जायेंगे, और तेरे कंठ
को सजाने का एक आभूषण। २३ तब तू सुरक्षित
बना निज मार्ग विचरेगा और तेरा पैर कभी ठोकर
नहीं खायेगा। २४ तुझको सोने पर कभी भय नहीं
व्यापेगा और सो जाने पर तेरी नींद मधुर होगी।
२५ आकस्मिक नाश से तू कभी मत डर, या उस
विनाश से जो दृष्टों पर आ पड़ता है। २६ क्योंकि
तेरा विश्वास यहोवा बन जायेगा और वह ही तेरे
पैर को फंदे में फँसने से बचायेगा।
२७ जब तक ऐसा करना तेरी शक्ति में हो अच्छे
को उनसे बचा कर मत रख जो जन अच्छा फल
पाने योग्य है। २८ जब अपने पड़ोसी को देने तेरे

पास रखा हो तो उससे ऐसा मत कह कि "बाद में आना कल तुझे दूँगा।"

२९ तेरा पड़ोसी विश्वास से तेरे पास रहता हो तो उसके विरुद्ध उसको हानि पहुँचाने के लिये कोई षड़यंत्र मत रच।

३० बिना किसी कारण के किसी को मत कोस, जबकि उस जन ने तुझे क्षति नहीं पहुँचाई है।

३१ किसी बुरे जन से तू द्वेष मत रख और उसकी सी चाल मत चल। ३२ तू अपनी चल। क्यों क्योंकि यहोवा कुटिल जन से घृणा करता है और सच्चरित्र जन को अपनाता है।

३३ दुष्ट के घर पर यहोवा का शाप रहता है, वह नेक के घर को आशीर्वाद देता है।

३४ वह गर्वीले उच्छृंखल की हंसी उड़ाता है किन्तु दीन जन पर वह कृपा करता है।

३५ विवेकी जन तो आदर पायेंगे, किन्तु वह मूर्खों को, लज्जित ही करेगा।

विवेक का महत्व

४ १ हे मेरे पुत्रों, एक पिता की शिक्षा को सुनों उस पर ध्यान दो और तुम समझ बूझ पा लो! २ मैं तुम्हें गहन—गम्भीर ज्ञान देता हूँ। मेरी इस शिक्षा का त्याग तुम मत करना।

३ जब मैं अपने पिता के घर एक बालक था और माता का अति कोमल एक मात्र शिशु था, ४ मुझे सिखाते हुये उसने कहा था—मेरे वचन अपने पूर्ण मन से थामे रह। मेरे आदेश पाल तो तू जीवित रहेगा। ५ तू बुद्धि प्राप्त कर और समझ बूझ प्राप्त कर! मेरे वचन मत भूल और उनसे मत डिग। ६ बुद्धि मत त्याग वह तेरी रक्षा करेगी, उससे प्रेम कर वह तेरा ध्यान रखेगी।

७ "बुद्धि का आरम्भ ये है : तू बुद्धि प्राप्त कर, चाहे सब कुछ दे कर भी तू उसे प्राप्त कर! तू समझबूझ प्राप्त कर। ८ तू उसे महत्व दे, वह तुझे ऊँचा उठायेगी, उसे तू गले लगा ले वह तेरा मान बढ़ायेगी। ९ वह तेरे सिर पर शोभा की माला धरेगी और वह तुझे एक वैभव का मुकुट देगी।"

१० सुन, हे मेरे पुत्र। जो मैं कहता हूँ तू उसे ग्रहण कर! तू अनगिनत सालों साल जीवित रहेगा। ११ मैं तुझे बुद्धि के मार्ग की राह दिखाता हूँ, और सरल पथों पर अगुवाई करता हूँ। १२ जब तू आगे बढ़ेगा तेरे चरण बाधा नहीं पायेंगे, और जब तू दौड़ेगा ठोकर नहीं खायेगा। १३ शिक्षा को थामे रह, उसे तू मत छोड़। इसकी रखवाली कर। यही तेरा जीवन है।

१४ तू दुष्टों के पथ पर चरण मत रख या पापी जनों की राह पर मत चल। १५ तू इससे बचता रह, इसपर कदम मत बढ़ा। इससे तू मुड़ जा। तू अपनी राह चल। १६ वे बुरे काम किये बिना सो नहीं पाते। वे नींद खो बैठते हैं जब तक किसी को नहीं गिराते। १७ वे तो बस सदा नीचता की रोटी खाते और हिंसा का दाखमधु पीते हैं।

१८ किन्तु धर्मी का पथ वैसा होता है जैसी प्रातः किरण होती है। जो दिन की परिपूर्णता तक अपने प्रकाश में बढ़ती ही चली जाती है। १९ किन्तु पापी का मार्ग सघन, अन्धकार जैसा होता है। वे नहीं जान पाते कि किससे टकराते हैं।

२० हे मेरे पुत्र, जो कुछ मैं कहता हूँ उस पर ध्यान दे। मेरे वचनों को तू कान लगा कर सुन। २१ उन्हें अपनी दृष्टि से ओझल मत होने दे। अपने हृदय पर तू उन्हें धरे रह। २२ क्योंकि जो उन्हें पाते हैं उनके लिये वे जीवन बन जाते हैं और वे एक पुरुष की सम्पूर्ण काया का स्वास्थ्य बनते हैं। २३ सबसे बड़ी बात यह है कि तू अपने विचारों के बारे में सावधान रह। क्योंकि तेरे विचार जीवन को नियंत्रण में रखते हैं।

२४ तू अपने मुख से कुटिलता को दूर रख। तू अपने होठों से भ्रष्ट बात दूर रख। २५ तेरी आँखों के आगे सदा सीधा मार्ग रहे और तेरी टकटकी आगे ही लगी रहें। २६ अपने पैरों के लिये तू सीधा मार्ग बना। बस तू उन राहों पर चल जो निश्चित सुरक्षित हैं। २७ दाहिने को अथवा बायें को मत डिग। तू अपने चरणों को बुराई से रोके रह।

पराई स्त्री से बचे रह

५ १ हे मेरे पुत्र, तू मेरी बुद्धिमता की बातों पर ध्यान दे। मेरे अन्तर्दृष्टि के वचन को लगन से सुन। २ जिससे तेरा भले बुरे का बोध बना रहे और तेरे होठों पर ज्ञान संरक्षित रहे। ३ क्योंकि व्यभिचारिणी के होंठ मधु टपकाते हैं और उसकी वाणी तेल सी फिसलन भरी है। ४ किन्तु परिणाम में यह ज़हर सी कड़ुवी और दुधारी तलवार सी तेज धार है! ५ उसके पैर मृत्यु के गर्त की तरफ बढ़ते हैं और वे सीधे कब्र तक ले जाते हैं! ६ वह कभी भी जीवन के मार्ग की नहीं सोचती! उसकी राहें खोटी हैं! किन्तु, हाय, उसे ज्ञात नहीं!

७ अब मेरे पुत्रों, तुम मेरी बात सुनों। जो कुछ भी मैं कहता हूँ, उससे मुँह मत मोड़ो। ८ तुम ऐसी राह चलो, जो उससे सुदूर हो। उसके घर—द्वार के पास तक मत जाना। ९ नहीं तो तुम अपनी उत्तम शक्ति को दूसरों के हाथों में दे बैठोगे

और अपने जीवन वर्ष किसी ऐसे को जो क्रूर है। १० ऐसा न हो, तुम्हारे धन पर अजनबी मौज करें। तुम्हारा परिश्रम औरों का घर भरे। ११ जब तेरा माँस और काया चूक जायेंगे तब तुम अपने जीवन के आखिरी छोर पर रोते बिलखते यूँ ही रह जाओगे। १२ और तुम कहोगे, "हाय! अनुशासन से मैंने क्यों बैर किया क्यों मेरा मन सुधार की उपेक्षा करता रहा १३ मैंने अपने शिक्षकों की बात नहीं मानी अथवा मैंने अपने प्रशिक्षकों पर ध्यान नहीं दिया। १४ मैं सारी मण्डली के सामने, महानाश के किनारे पर आ गया हूँ।"

१५ तू अपने जल—कुंड से ही पानी पिया कर और तू अपने ही कुँए से स्वच्छ जल पिया कर। १६ तू ही कह, क्या तेरे जलस्रोत राहों में इधर उधर फैल जायें और तेरी जलधारा चौराहों पर फैले १७ ये तो बस तेरी हो, एकमात्र तेरी ही। उसमे कभी किसी अजनबी का भाग न हो। १८ तेरा स्रोत धन्य रहे और अपने जवानी की पत्नी के साथ ही तू आनन्दित रह का रसपान। १९ तेरी वह पत्नी, प्रियतमा, प्राणप्रिया, मनमोहक हिरणी सी तुझे सदा तृप्त करे। उसके माँसल उरोज और उसका प्रेम पाश तुझको बाँधे रहे। २० हे मेरे पुत्र, कोई व्यभिचारिणी तुझको क्यों बान्ध पाये और किसी दूसरे की पत्नी को तू क्यों गले लगाये

२१ यहोवा तेरी राहें पूरी तरह देखता है और वह तेरी सभी राहें परखता रहता है। २२ दुष्ट के बुरे कर्म उसको बान्ध लेते हैं। उसका ही पाप जाल उसको फँसा लेता है। २३ वह बिना अनुशासन के मर जाता है। उसके ये बड़े दोष उसको भटकाते हैं।

कोई चूक मत कर

६ १ हे मेरे पुत्र, बिना समझे बूझे यदि किसी की जमानत दी है अथवा किसी के लिये वचनबद्ध हुआ है, २ यदि तू अपने ही कथन के जाल में फँस गया है, तू अपने मुख के ही शब्दों के पिंजरे में बन्द हो गया है ३ तो मेरे पुत्र, क्योंकि तू औरों के हाथों में पड़ गया है, तू स्वंय को बचाने को ऐसा कर: तू उसके निकट जा और विनम्रता से अपने पड़ोसी से अनुनय विनम्र कर। ४ निरन्तर जागता रह, आँखों में नींद न हो और तेरी पलकों में झपकी तक न आये। ५ स्वंय को चंचल हिरण शिकारी के हाथ से और किसी पक्षी सा उसके जाल से छुड़ा ले।

आलसी मत बनों

६ अरे ओ आलसी, चींटी के पास जा। उसकी कार्य विधि देख और उससे सीख ले। ७ उसका न तो कोई नायक है, न ही कोई निरीक्षक न ही कोई शासक है। ८ फिर भी वह ग्रीष्म में भोजन बटोरती है और कटनी के समय खाना जुटाती है।

९ अरे ओ दीर्घ सूत्री, कब तक तुम यहाँ पड़े ही रहोगे? अपनी निद्रा से तुम कब जाग उठोगे? १० तुम कहते रहोगे, "थोड़ा सा और सो लूँ, एक झपकी ले लूँ, थोड़ा सुस्ताने को हाथों पर हाथ रख लूँ।" ११ और बस तुझको दरिद्रता एक बटमार सी आ घेरेगी और अभाव शस्त्रधारी सा घेर लेगा।

दुष्ट जन

१२ नीच और दुष्ट वह होता है जो बुरी बातें बोलता हुआ फिरता रहता है। १३ जो आँखों द्वारा इशारा करता है और अपने पैरों से संकेत देता है और अपनी उगंलियों से इशारे करता है। १४ जो अपने मन में षडयन्त्र रचता है और जो सदा अनबन उपजाता रहता है। १५ अत: उस पर अचानक महानाश गिरेगा और तत्काल वह नष्ट हो जायेगा। उस के पास बचने का उपाय भी नहीं होगा।

वे सात बातें जिनसे यहोवा घृणा करता है

१६ ये हैं छ: बातें वे जिनसे यहोवा घृणा रखता और
ये ही सात बातें जिनसे है उसको बैर:
१७ गर्वीली आँखें, झूठ से भरी वाणी,
वे हाथ जो अबोध के हत्यारे हैं।
१८ ऐसा हृदय जो कुचक्र भरी योजनाएँ रचता
रहताहै,
ऐसे पैर जो पाप के मार्ग पर तुरन्त दौड़ पड़ते हैं।
१९ वह झूठा गवाह, जो निरन्तर झूठ उगलता है
और ऐसा व्यक्ति जो भाईयों के बीच फूट डाले।

दुराचार के विरुद्ध चेतावनी

२० हे मेरे पुत्र, अपने पिता की आज्ञा का पालन कर और अपनी माता की सीख को कभी मत त्याग। २१ अपने हृदय पर उनको सदैव बांधे रह और उन्हें अपने गले का हार बना ले। २२ जब तू आगे बढ़ेगा, वे राह दिखायेंगे। जब तू सो जायेगा, वे तेरी रखवाली करेंगे और जब तू जागेगा, वे तुझसे बातें करेंगे।

२३ क्योंकि ये आज्ञाएँ दीपक हैं और यह शिक्षा एक ज्योति है। अनुशासन के सुधार तो जीवन

का मार्ग है। २४ जो तुझे चरित्रहीन स्त्री से
और भटकी हुई कुलटा की फुसलाती बातों से
बचाते हैं। २५ तू अपने मन को उसकी सुन्दरता पर
कभी वासना सक्त मत होने दे और उसकी आँखों
का जादू मत चढ़ने दे। २६ क्योंकि वह वेश्या तो
तुझको रोटी—रोटी का मुहताज कर देगी किन्तु
वह कुलटा तो तेरा जीवन ही हर लेगी! २७ क्या
यह सम्भव है कि कोई किसी के गोद में आग रख
दे और उसके वस्त्र फिर भी जरा भी न जलें?
२८ दहकते अंगारों पर क्या कोई जन अपने पैरों को
बिना झुलसाये हुए चल सकता है? २९ वह मनुष्य
ऐसा ही है जो किसी अन्य की पत्नी से समागम
करता है। ऐसी पर स्त्री को जो भी कोई छूएगा,
वह बिना दण्ड पाये नहीं रह पायेगा।

३०-३१ यदि कोई चोर कभी भूखों मरता हो, यदि
यह भूख को मिटाने के लिये चोरी करे तो लोग उस
से घृणा नहीं करेंगे। फिर भी यदि वह पकड़ा जाये
तो उसे सात गुणा भरना पड़ता है चाहे उससे उसके
घर का समूचा धन चुक जाये। ३२ किन्तु जो पर
स्त्री से समागम करता है उसके पास तो विवेक
का आभाव है। ऐसा जो करता है वह स्वयं को
मिटाता है। ३३ प्रहार और अपमान उसका भाग्य
है। उसका कलंक कभी नहीं धुल पायेगा। ३४ ईर्ष्या
किसी पति का क्रोध जगाती है और जब वह
इसका बदला लेगा तब वह उस पर दया नहीं
करेगा। ३५ वह कोई क्षति पूर्ति स्वीकार नहीं करेगा
और कोई उसे कितना ही बड़ा प्रलोभन दे, उसे
वह स्वीकारे बिना ठुकरायेगा!

विवेक दुराचार से बचाता है

७ १ हे मेरे पुत्र, मेरे वचनों को पाल और अपने
मन में मेरे आदेश संचित कर। २ मेरे आदेशों
का पालन करता रहा तो तू जीवन पायेगा। तू
मेरे उपदेशों को अपनी आँखों की पुतली सरीखा
सम्भाल कर रख। ३ उनको अपनी उंगलियों पर
बाँध ले, तू अपने हृदय पटल पर उनको लिख
ले। ४ बुद्धि से कह, "तू मेरी बहन है" और तू
समझ बूझ को अपनी कुटुम्बी जन कह। ५ वे ही
तुझको उस कुलटा से और स्वेच्छाचारिणी पत्नी
के लुभावनें वचनों से बचायेंगे।

६ एक दिन मैंने अपने घर की खिड़की के
झरोखे से झाँका, ७ सरल युवकों के बीच एक ऐसा
नवयुवक देखा जिसको भले—बुरे की पहचान नहीं
थी। ८ वह उसी गली से होकर, उसी कुलटा के
नुक्कड़ के पास से जा रहा था। वह उसके ही घर की
तरफ बढ़ता जा रहा था। ९ सूरज शाम के धुंधलके
में डूबता था, रात के अन्धेरे की तहें जमती जाती
थी। १० तभी कोई कामिनी उससे मिलने के लिये
निकल कर बाहर आई। वह वेश्या के वेश में सजी
हुई थी। उसकी इच्छाओं में कपट छुपा था। ११ वह
वाचाल और निरंकुश थी। उसके पैर कभी घर में
नहीं टिकते थे। १२ वह कभी — कभी गलियों में,
कभी चौराहों पर, और हर किसी नुक्कड़ पर घात
लगाती थी। १३ उसने उसे रोक लिया और उसे
पकड़ा। उसने उसे निर्लज्ज मुख से चूम लिया,
फिर उससे बोली, १४ "आज मुझे मैत्री भेंट अर्पित
करनी थी। मैंने अपनी मन्नत पूरी कर ली है।
मैंने जो प्रतिज्ञा की थी, दे दिया है। उसका कुछ
भाग मैं घर ले जा रही हूँ। अब मेरे पास बहुतेरे
खाने के लिये है! १५ इसलिये मैं तुझसे मिलने बाहर
आई। मैं तुझे खोजती रही और तुझको पा लिया।
१६ मैंने मिस्र के मलमल की रंगों भरी चादर से
सेज सजाई है। १७ मैंने अपनी सेज को गंधरस,
दालचीनी और अगर गंध से सुगन्धित किया है।
१८ तू मेरे पास आ जा। भोर की किरण चूर हुए,
प्रेम की दाखमधु पीते रहें। आ, हम परस्पर प्रेम
से भोग करें। १९ मेरे पति घर पर नहीं है। वह दूर
यात्रा पर गया है। २० वह अपनी थैली धन से
भर कर ले गया है और पूर्णमासी तक घर पर नहीं
होगा।"

२१ उसने उसे लुभावने शब्दों से मोह लिया।
उसको मीठी मधुर वाणी से फुसला लिया। २२ वह
तुरन्त उसके पीछे ऐसे हो लिया जैसे कोई बैल
वध के लिये खिंचा चला जाये। जैसे कोई निरा मूर्ख
जाल में पैर धरे। २३ जब तक एक तीर उसका हृदय
नहीं बेधेगा तब तक वह उस पक्षी सा जाल पर
बिना यह जाने टूट पड़ेगा कि जाल उसके प्राण
हर लेगा।

२४ सो मेरे पुत्रों, अब मेरी बात सुनो और जो
कुछ मैं कहता हूँ उस पर ध्यान धरो। २५ अपना
मन कुलटा की राहों में मत खिंचने दो अथवा
उसे उसके मार्गो पर मत भटकने दो। २६ कितने ही
शिकार उसने मार गिरायें हैं। उसने जिनको मारा
उनका जमघट बहुत बड़ा है। २७ उस का घर वह
राजमार्ग है जो कब्र को जाता है और नीचे मृत्यु
की काल—कोठरी में उतरता है!

सुबुद्धि की पुकार

८ १ क्या सुबुद्धि तुझको पुकारती नहीं है?
क्या समझबूझ ऊँची आवाज नहीं देती?
२ वह राह के किनारे ऊँचे स्थानों पर खड़ी रहती है
जहाँ मार्ग मिलते हैं।

३ वह नगर को जाने वाले द्वारों के सहारे
उपर सिंह द्वार के ऊपर पुकार कर कहती है,
४ "हे लोगों, मैं तुमको पुकारती हूँ,
मैं सारी मानव जाति हेतु आवाज़ उठाती हूँ।
५ अरे भोले लोगों! दूर दृष्टि प्राप्त करो,
तुम, जो मूर्ख बने हो, समझ बूझ अपनाओ।
६ सुनो! क्योंकि मेरे पास कहने को उत्तम बातें हैं,
अपना मुख खोलती हूँ, जो कहने को उचित हैं।
७ मेरे मुख से तो वही निकलता है जो सत्य हैं,
क्योंकि मेरे होंठों को दुष्टता से घृणा हैं।
८ मेरे मुख के सभी शब्द न्यायपूर्ण होते हैं
कोई भी कुटिल, अथवा भ्रान्त नहीं हैं।
९ विचारशील जन के लिये
वे सब साफ़ है
और ज्ञानी जन के लिये
सब दोष रहित है।
१० चाँदी नहीं बल्कि तू मेरी शिक्षा ग्रहण कर
उत्तम स्वर्ग नहीं बल्कि तू ज्ञान ले।
११ सुबुद्धि, रत्नों, मणि माणिकों से अधिक
मूल्यवान है।
तेरी ऐसी मनचाही कोई वस्तु जिससे उसकी
तुलना हो।"
१२ "मैं सुबुद्धि,
विवेक के संग रहती हूँ,
मैं ज्ञान रखती हूँ, और भले—बुरे का भेद जानती
हूँ।
१३ यहोवा का डरना, पाप से घृणा करना है।
गर्व और अहंकार, कुटिल व्यवहार
और पतनोन्मुख बातों से मैं घृणा करती हूँ।
१४ मेरे परामर्श और न्याय उचित होते हैं।
मेरे पास समझ—बूझ और सामर्थ्य है।
१५ मेरे ही सहारे राजा राज्य करते हैं,
और शासक नियम रचते हैं, जो न्याय पूर्ण है।
१६ मेरी ही सहायता से धरती के सब महानुभाव
शासक राज चलाते हैं।
१७ जो मुझसे प्रेम करते हैं, मैं भी उन्हें प्रेम करती
हूँ,
मुझे जो खोजते हैं, मुझको पा लेते हैं।
१८ सम्पत्तियाँ और आदर मेरे साथ हैं।
मैं खरी सम्पत्ति और यश देती हूँ।
१९ मेरा फल स्वर्ण से उत्तम है।
मैं जो उपजाती हूँ, वह शुद्ध चाँदी से अधिक है।
२० मैं न्याय के मार्ग के सहारे
नेकी की राह पर चलती रहती हूँ।
२१ मुझसे जो प्रेम करते उन्हें मैं धन देती हूँ,
और उनके भण्डार भर देती हूँ।
२२ "यहोवा ने मुझे अपनी रचना के प्रथम
अपने पुरातन कर्मों से पहले ही रचा है।
२३ मेरी रचना सनातन काल से हुई।
आदि से, जगत की रचना के पहले से हुई।
२४ जब सागर नहीं थे, जब जल से लबालब सोते
नहीं थे,
मुझे जन्म दिया गया।
२५ मुझे पर्वतों—पहाड़ियों की स्थापना से पहले
ही जन्म दिया गया।
२६ धरती की रचना, या उसके खेत
अथवा जब धरती के धूल कण रचे गये।
२७ मेरा अस्तित्व उससे भी पहले वहाँ था।
जब उसने आकाश का वितान ताना था
और उसने सागर के दूसरे छोर पर क्षितिज को
रेखांकित किया था।
२८ उसने जब आकाश में सघन मेघ टिकाये थे,
और गहन सागर के स्रोत निर्धारित किये,
२९ उसने समुद्र की सीमा बांधी थी
जिससे जल उसकी आज्ञा कभी न लाँघे,
धरती की नीवों का सूत्रपात उसने किया,
तब मैं उसके साथ कुशल शिल्पी सी थी।
३० मैं दिन—प्रतिदिन आनन्द से परिपूर्ण होती
चली गयी।
उसके सामने सदा आनन्द मनाती।
३१ उसकी पूरी दुनिया से मैं आनन्दित थी।
मेरी खुशी समूची मानवता थी।
३२ "तो अब, मेरे पुत्रों, मेरी बात सुनो।
वो धन्य है!
जो जन मेरी राह पर चलते हैं।
३३ मेरे उपदेश सुनो और बुद्धिमान बनो।
इनकी उपेक्षा मत करो।
३४ वही जन धन्य है, जो मेरी बात सुनता और रोज
मेरे द्वारों पर दृष्टि लगाये रहता
एवं मेरी ड्योढ़ी पर बाट जोहता रहता है।
३५ क्योंकि जो मुझको पा लेता वही जीवन पाता
और वह यहोवा का अनुग्रह पाता है।
३६ किन्तु जो मुझको, पाने में चूकता, वह तो अपनी
ही हानि करता है।
मुझसे जो भी जन सतत् बैर रखते हैं, वे जन तो
मृत्यु के प्यारे बन जाते हैं!"

सुबुद्धि और दुर्बुद्धि

९ १ सुबुद्धि ने अपना घर बनाया है। उसने
अपने सात खम्भे गढ़े हैं। २ उसने अपना
भोजन तैयार किया और मिश्रित किया अपना
दाखमधु अपनी खाने की मेज सजा ली है।

३ और अपनी दासियों को नगर के सर्वोच्च स्थानों
से बुलाने को भेजा है। ४ "जो भी भोले भाले
हैं, यहाँ पर पधारें।" जो विवेकी नहीं, वह उनसे
यह कहती है, ५ "आओ, मेरा भोजन करो, और
मिश्रित किया हुआ मेरा दाखमधु पिओ। ६ तुम
अपनी दुर्बद्धि के मार्ग को छोड़ दो, तो जीवित
रहोगे। तुम समझ—बूझ के मार्ग पर आगे बढ़ो।"
७ जो कोई उपहास करने वाले को, सुधारता
है, अपमान को बुलाता है, और जो किसी नीच
को समझाने डांटे वह गाली खाता है। ८ हँसी
उड़ानेवाले को तुम कभी मत डाँटो, नहीं तो वह
तुमसे ही घृणा करने लगेगा। किन्तु यदि तुम किसी
विवेकी को डाँटो, तो वह तुमसे प्रेम ही करेगा।
९ बुद्धिमान को प्रबोधो, वह अधिक बुद्धिमान
होगा, किसी धर्मी को सिखाओ, वह अपनी ज्ञान
वृद्धि करेगा।
१० यहोवा का आदर करना सुबुद्धि को हासिल
करने का पहिला कदम है, यहोवा का ज्ञान प्राप्त
करना समझबूझ को पाने का पहिला कदम है।
११ क्योंकि मेरे द्वारा ही तेरी आयु बढ़ेगी, तेरे दिन
बढ़ेंगे, और तेरे जीवन में वर्ष जुड़ते जोयेंगे।
१२ यदि तू बुद्धिमान है, सदबुद्धि तुझे प्रतिफल
देगी। यदि तू उच्छृंखल है, तो अकेला कष्ट
पायेगा।
१३ दुर्बुद्धि ऐसी स्त्री है जो बातें बनाती और
अनुशासन नहीं मानती। उसके पास ज्ञान नहीं है।
१४ अपने घर के दरवाजे पर वह बैठी रहती है,
नगर के सर्वोच्च बिंदु पर वह आसन जमाती है।
१५ वहाँ से जो गुज़रते वह उनसे पुकारकहती, जो
सीधे—सीधे अपनी ही राह पर जा रहे ; १६ "अरे
निर्बुद्धियों ! तुम चले आओ भीतर" वह उनसे यह
कहती है जिनके पास भले बुरे का बोध नहीं है,
१७ "चोरी का पानी तो, मीठा—मीठा होता है, छिप
कर खाया भोजन, बहुत स्वाद देता है।" १८ किन्तु
वे यह नहीं जानते कि वहाँ मृतकों का वास होता
है और उसके मेहमान कब्र में समाये हैं !

सुलैमान की सूक्तियाँ

१० १ एक बुद्धिमान पुत्र अपने पिता को
आनन्द देता है
किन्तु एक मूर्ख पुत्र, माता का दुःख होता है।
२ बुराई से कमाये हुए धन के कोष सदा व्यर्थ
रहते हैं ! जबकि धार्मिकता मौत से छुड़ाती है।
३ किसी नेक जन को यहोवा भूखा नहीं रहने
देगा, किन्तु दुष्ट की लालसा पर पानी फेर देता
है।
४ सुस्त हाथ मनुष्य को दरिद्र कर देते हैं, किन्तु
परिश्रमी हाथ सम्पत्ति लाते हैं।
५ गर्मियों में जो उपज को बटोर रखता है, वही
पुत्र बुद्धिमान है ; किन्तु जो कटनी के समय में
सोता है वह पुत्र शर्मनाक होता है।
६ धर्मी जनों के सिर आशीषों का मुकुट होता
किन्तु दुष्ट के मुख से हिंसा ऊफन पड़ती।
७ धर्मी का वरदान स्मरण मात्र बन जाये ; किन्तु
दुष्ट का नाम दुर्गन्ध देगा।
८ वह आज्ञा मानेगा जिसका मन विवेकशील है,
जबकि बकवासी मूर्ख नष्ट हो जायेगा।
९ विवेकशील व्यक्ति सुरक्षित रहता है, किन्तु
टेढ़ी चाल वाले का भण्डा फूटेगा।
१० जो बुरे इरादे से आँख से इशारा करे, उसको
तो उससे दुःख ही मिलेगा। और बकवासी मूर्ख
नष्ट हो जायेगा।
११ धर्मी का मुख तो जीवन का स्रोत होता है,
किन्तु दुष्ट के मुख से हिंसा ऊफन पड़ती है।
१२ दुष्ट के मुख से घृणा भेद—भावों को उत्तेजित
करती है जबकि प्रेम सब दोषों को ढक लेता है।
१३ बुद्धि का निवास सदा समझदार होठों पर
होता है, किन्तु जिसमें भले बुरे का बोध नहीं होता,
उसके पीठ पर डंडा होता है।
१४ बुद्धिमान लोग, ज्ञान का संचय करते रहते,
किन्तु मूर्ख की वाणी विपत्ति को बुलाती है।
१५ धनी का धन, उनका मज़बूत किला होता,
दीन की दीनता पर उसका विनाश है।
१६ नेक की कमाई, उन्हें जीवन देती है, किन्तु
दुष्ट की आय दण्ड दिलवाती।
१७ ऐसे अनुशासन से जो जन सीखता है, जीवन
के मार्ग की राह वह दिखाता है। किन्तु जो सुधार
की उपेक्षा करता है ऐसा मनुष्य तो भटकाया
करता है।
१८ जो मनुष्य बैर पर परदा डाले रखता है, वह
मिथ्यावादी है और वह जो निन्दा फैलाता है, मूढ़
है।
१९ अधिक बोलने से, कभी पाप नहीं दूर होता
किन्तु जो अपनी जुबान को लगाम देता है, वही
बुद्धिमान है।
२० धर्मी की वाणी विशुद्ध चाँदी है, किन्तु दुष्ट के
हृदय का कोई नहीं मोल।
२१ धर्मी के मुख से अनेक का भला होता, किन्तु
मूर्ख समझ के अभाव में मिट जाते।
२२ यहोवा के वरदान से जो धन मिलता है, उसके
साथ वह कोई दुःख नहीं जोड़ता।

२३ बुरे आचार में मूढ़ को सुख मिलता, किन्तु एक
समझदार विवेक में सुख लेता है।
२४ जिससे मूढ़ भयभीत होता, वही उस पर आ
पड़ेगी, धर्मी की कामना तो पूरी की जायेगी।
२५ आंधी जब गुज़रती है, दुष्ट उड़ जाते हैं,
किन्तु धर्मी जन तो, निरन्तर टिके रहते हैं।
२६ काम पर जो किसी आलसी को भेजता है, वह
बन जाता है जैसे अम्ल सिरका दाँतों को खटाता
है, और धुंआ आँखों को तड़पाता दुःख देता है।
२७ यहोवा का भय आयु का आयाम बढ़ाता है,
किन्तु दुष्ट की आयु तो घटती रहती है।
२८ धर्मी का भविष्य आनन्द—उल्लास है।
किन्तु दुष्ट की आशा तो व्यर्थ रह जाती है।
२९ धर्मी जन के लिये यहोवा का मार्ग शरण
स्थल है किन्तु जो दुराचारी है, उनका यह विनाश
है।
३० धर्मी जन को कभी उखाड़ा न जायेगा, किन्तु
दुष्ट धरती पर टिक नहीं पायेगा।
३१ धर्मी के मुख से बुद्धि प्रवाहित होती है,
किन्तु कुटिल जीभ को तो काट फेंका जायेगा।
३२ धर्मी के अधर जो उचित है जानते हैं, किन्तु
दुष्ट का मुख बस कुटिल बातें बोलता।

११ १ यहोवा छल के तराजू से घृणा करता है,
किन्तु उसका आनन्द सही नाप—तौल है।
२ अभिमान के संग ही अपमान आता है, किन्तु
नम्रता के साथ विवेक आता है।
३ नेकों की नेकी उनकी अगुवाई करती है, किन्तु
दुष्टों को दुष्टता ही ले डूबेगी।
४ कोप के दिन धन व्यर्थ रहता, काम नहीं आता
है ; किन्तु तब नेकी लोगों को मृत्यु से बचाती है।
५ नेकी निर्दोषों के हेतु मार्ग सरल—सीधा
बनाती है, किन्तु दुष्ट जन को उसकी अपनी ही
दुष्टता धूलें चटा देती।
६ नेकी सज्जनों को छुड़वाती है, किन्तु
विश्वासहीन बुरी इच्छाओं के जाल में फँस जाते
हैं।
७ जब दुष्ट मरता है, उनकी आशा मर जाती है।
अपनी शक्ति से जो कुछ अपेक्षा उसे थी, व्यर्थ
चली जाती है।
८ धर्मी जन तो विपत्ति से छुटकारा पा लेता है,
जबकि उसके बदले वह दुष्ट पर आ पड़ती है।
९ भक्तिहीन की वाणी अपने पड़ोसी को ले
डूबती है, किन्तु ज्ञान द्वारा धर्मी जन तो बच
निकलता है।
१० धर्मी का विकास नगर को आनन्दित करता
जबकि दुष्ट का नाश हर्ष—नाद उपजाता।
११ सच्चे जन की आशीष नगर को ऊँचा उठा
देती किन्तु दुष्टों की बातें नीचे गिरा देती हैं।
१२ ऐसा जन जिसके पास विवेक नहीं होता,
वह अपने पड़ोसी का अपमान करता है, किन्तु
समझदार व्यक्ति चुप चाप रहता है।
१३ जो चतुराई करता फिरता है, वह भेद प्रकट
करता है, किन्तु विश्वासी जन भेद को छिपाता है।
१४ जहाँ मार्ग दर्शन नहीं वहाँ राष्ट्र पतित
होता, किन्तु बहुत सलाहकार विजय को
सुनिश्चित करते हैं।
१५ जो अनजाने का जामिन बनता है, वह
निश्चय ही पीड़ा उठायेगा, किन्तु अपने हाथों को
बंधक बनाने से जो मना कर देता है, वह सुरक्षित
रहता है।
१६ दयालु स्त्री तो आदर पाती है जबकि क्रूर
जन का लाभ केवल धन है।
१७ दयालु मनुष्य स्वयं अपना भला करता है,
जबकि दयाहीन स्वयं पर विपत्ति लाता है।
१८ दुष्ट जन कपट भरी रोजी कमाता है, किन्तु
जो नेकी को बोता रहता है, उसको तो सुनिश्चत
प्रतिफल का पाना है।
१९ सच्चा धर्मी जन जीवन पाता है, किन्तु जो
बुराई को साधता रहता वह तो बस अपनी मृत्यु
को पहुँचता है।
२० कुटिल जनों से, यहोवा घृणा करता है किन्तु
वह उनसे प्रसन्न होता है जिनके मार्ग सर्वदा सीधे
होते हैं।
२१ यह जानना निश्चित है, दुष्ट जन कभी दण्ड
से नहीं बचेगा। किन्तु जो नेक है वे छूट जायेंगे।
२२ जो भले बुरे में भेद नहीं करती, उस स्त्री की
सुन्दरता ऐसी है जैसे किसी सुअर की थुथनी में
सोने की नथ।
२३ नेक की इच्छा का भलाई में अंत होता है,
किन्तु दुष्ट की आशा रोष में फैलती है।
२४ जो उदार मुक्त भाव से दान देता है, उसका
लाभ तो सतत बढ़ता ही जाता है, किन्तु जो
अनुचित रूप से सहेज रखते, उनका तो अंत बस
दरिद्रता होता।
२५ उदार जन तो सदा, फूलेगा फलेगा और जो
दूसरों की प्यास बुझायेगा उसकी तो प्यास अपने
आप ही बुझेगी।
२६ अन्न का जमाखोर लोगों की गाली खाता,
किन्तु जो उसे बेचने को राजी होता है उसके सिर
वरदान का मुकुट से सजता है।

२७ जो भलाई पाने को जतन करता है वही यश
पाता है किन्तु जो बुराई के पीछे पड़ा रहता उसके
तो हाथ बस बुराई ही लगती है।
२८ जो कोई निज धन का भरोसा करता है, झड़
जायेगा वह निर्जीव सूखे पत्ते सा ; किन्तु धर्मी जन
नयी हरी कोपल सा हरा—भरा ही रहेगा।
२९ जो अपने घराने पर विपत्ति लायेगा, दान में
उसे वायु मिलेगा और मूर्ख, बुद्धिमान का दास
बनकर रहेगा।
३० धर्मी का कर्म—फल "जीवन का वृक्ष" है, और
जो जन मनों को जीत लेता है, वही बुद्धिमान है।
३१ यदि इस धरती पर धर्मी जन अपना उचित
प्रतिफल पाते हैं, तो फिर पापी और परमेश्वर
विहीन लोग कितना अपने कुकर्मो का फल यहाँ
पायेंगे।

१२ १ जो शिक्षा और अनुशासन से प्रेम करता
है, वह तो ज्ञान से प्रेम यूँ ही करता है।
किन्तु जो सुधार से घृणा करता है, वह तो निरा
मूर्ख है।
२ सज्जन मनुष्य यहोवा की कृपा पाता है, किन्तु
छल छंदी को यहोवा दण्ड देता है।
३ दुष्टता, किसी जन को स्थिर नहीं कर सकती
किन्तु धर्मी जन कभी उखाड़ नहींपाता है।
४ एक उत्तम पत्नी के साथ पति खुश और
गर्वीला होता है। किन्तु वह पत्नी जो अपने पति
को लजाती है वह उसको शरीर की बीमारी जैसे
होती है।
५ धर्मी की योजनाएँ न्याय संगत होती हैं जबकि
दुष्ट की सलाह कपटपूर्ण रहती है।
६ दुष्ट के शब्द घात में झपटने को रहते हैं।
किन्तु सज्जन की वाणी उनको बचाती है।
७ जो खोटे होते हैं उखाड़ फेंके जाते हैं, किन्तु
खरे जन का घराना टिका रहता है।
८ व्यक्ति अपनी भली समझ के अनुसार
प्रशंसा पाता है, किन्तु ऐसे जन जिनके मन कुपथ
गामी हों घृणा के पात्र होते हैं।
९ सामान्य जन बनकर परिश्रम करना उत्तम है
इसके बजाए कि भूखे रहकर महत्वपूर्ण जन सा
स्वांग भरना।
१० धर्मी अपने पशु तक की जरूरतों का ध्यान
रखता है, किन्तु दुष्ट के सर्वाधिक दया भरे काम
भी कठोर क्रूर रहते हैं।
११ जो अपने खेत में काम करता है उसके पास
खाने की बहुतायत होंगी ; किन्तु पीछे भागता
रहता जो ना समझ के उसके पास विवेक का
अभाव रहता है।
१२ दुष्ट जन पापियों की लूट को चाहते हैं, किन्तु
धर्मी जन की जड़ हरी रहती है।
१३ पापी मनुष्य को पाप उसका अपना ही
शब्द—जाल में फँसा लेता है। किन्तु खरा व्यक्ति
विपत्ति से बच निकलता।
१४ अपनी वाणी के सुफल से व्यक्ति श्रेष्ठ
वस्तुओं से भर जाता है। निश्चय यह उतना
ही जितना अपने हाथों का काम करके उसको
सफलता देता है।
१५ मूर्ख को अपना मार्ग ठीक जान पड़ता है,
किन्तु बुद्धिमान व्यक्ति सन्मति सुनता है।
१६ मूर्ख जन अपनी झुंझलाहट झटपट दिखाता
है, किन्तु बुद्धिमान अपमान की उपेक्षा करता है।
१७ सत्यपूर्ण साक्षी खरी गवाही देता है, किन्तु
झूठा साक्षी झूठी बातें बनाता है।
१८ अविचारित वाणी तलवार सी छेदती, किन्तु
विवेकी की वाणी घावों को भरती है।
१९ सत्यपूर्ण वाणी सदा सदा टिकी रहती है,
किन्तु झूठी जीभ बस क्षण भर को टिकती है।
२० उनके मनों में छल—कपट भरा रहता है,
जो कुचक्र भरी योजना रचा करते हैं। किन्तु जो
शान्ति को बढ़ावा देते हैं, आनन्द पाते हैं।
२१ धर्मी जन पर कभी विपत्ति नहीं गिरेगी, किन्तु
दुष्टों को तो विपत्तियाँ घेरेंगी।
२२ ऐसे होठों से यहोवा घृणा करता है जो झूठ
बोलते हैं, किन्तु उन लोगों से जो सत्य से पूर्ण हैं,
वह प्रसन्न रहता है।
२३ ज्ञानी अधिक बोलता नहीं है, चुप रहता है
किन्तु मूर्ख अधिक बोल बोलकर अपने अज्ञान को
दर्शाता है।
२४ परिश्रमी हाथ तो शासन करेंगे, किन्तु
आलस्य का परिणाम बेगार होगा।
२५ चिंतापूर्ण मन व्यक्ति को दबोच लेता है ;
किन्तु भले वचन उसे हर्ष से भर देते हैं।
२६ धर्मी मनुष्य मित्रता में सतर्क रहता है,
किन्तु दुष्टों की चाल उन्हीं को भटकाती है।
२७ आलसी मनुष्य निज शिकार ढूँढ नहीं पाता
किन्तु परिश्रमी जो कुछ उसके पास है, उसे आदर
देता है।
२८ नेकी के मार्ग में जीवन रहता है, और उस
राह के किनारे अमरता बसती है।

१३ १ समझदार पुत्र निज पिता की शिक्षा पर
कान देता, किन्तु उच्छृंखल झिड़की पर भी
ध्यान नहीं देता।
२ सज्जन अपनी वाणी के सुफल का आनन्द
लेता है, किन्तु दुर्जन तो सदा हिंसा चाहता हैं।

३ जो अपनी वाणी के प्रति चौकस रहता है,
वह अपने जीवन की रक्षा करता है। पर जो गाल
बजाता रहता है, अपने विनाश को प्राप्त करता
है।
४ आलसी मनोरथ पालता है पर कुछ नहीं
पाता, किन्तु परिश्रमी की जितनी भी इच्छा है,
पूर्ण हो जाती है।
५ धर्मी उससे घृणा करता है, जो झूठ है जबकि
दुष्ट लज्जा और अपमान लाते हैं।
६ सच्चरित्र जन की रक्षक नेकी है जबकि बदी
पापी को, उलट फेंक देती है।
७ एक व्यक्ति जो धनी का दिखावा करता है;
किन्तु उसके पास कुछ भी नहीं होता है। और
एक अन्य जो दरिद्र का सा आचरण करता किन्तु
उसके पास बहुत धन होता है।
८ धनवान को अपना जीवन बचाने उसका धन
फिरौती में लगाना पड़ेगा किन्तु दीन जन ऐसे
किसी धमकी के भय से मुक्त है।
९ धर्मी का तेज बहुत चमचमाता किन्तु दुष्ट का
दीया *बुझा दिया जाता है।
१० अहंकार केवल झगड़ों को पनपाता है किन्तु
जो सम्मति की बात मानता है, उनमें ही विवेक
पाया जाता है।
११ बेइमानी का धन यूँ ही धूल हो जाता है किन्तु
जो बूँद—बूँद करके धन संचित करता है, उसका
धन बढ़ता है।
१२ आशा हीनता मन को उदास करती है, किन्तु
कामना की पूर्ति प्रसन्नता होती है।
१३ जो जन शिक्षा का अनादर करता है, उसको
इसका मूल्य चुकाना पड़ेगा। किन्तु जो शिक्षा का
आदर करता है, वह तो इसका प्रतिफल पाता है।
१४ विवेक की शिक्षा जीवन का उद्गम स्रोत है,
वह लोगों को मौत के फंदे से बचाती है।
१५ अच्छी भली समझ बूझ कृपा दृष्टि अर्जित
करती, पर विश्वासहीन का जीवन कठिन होता है।
१६ हर एक विवेकी ज्ञानपूर्वक काम करता, किन्तु
एक मूर्ख निज मूर्खता प्रकट करता है।
१७ कुटिल सन्देशवाहक विपत्ति में पड़ता है,
किन्तु विश्वसनीय दूत शांति देता है।
१८ ऐसा मनुष्य जो शिक्षा की उपेक्षा करता है,
उसपर लज्जा और दरिद्रता आ पड़ती है, किन्तु
जो शिक्षा पर कान देता है, वह आदर पाता है।
१९ किसी इच्छा का पूरा हो जाना मन को मधुर
लगता है किन्तु दोष का त्याग, मूर्खो को नहीं
भाता है।
२० बुद्धिमान की संगति, व्यक्ति को बुद्धिमान
बनाता है। किन्तु मूर्खो का साथी नाश हो जाता
है।
२१ दुर्भाग्य पापियों का पीछा करता रहता है
किन्तु नेक प्रतिफल में खुशहाली पाते हैं।
२२ सज्जन अपने नाती—पोतों को धन सम्पत्ति
छोड़ता है जबकि पापी का धन धर्मियों के निमित्त
संचित होता रहता है।
२३ दीन जन का खेत भरपूर फसल देता है, किन्तु
अन्याय उसे बुहार ले जाता है।
२४ जो अपने पुत्र को कभी नहीं दण्डित करता,
वह अपने पुत्र से प्रेम नहीं रखता है। किन्तु जो
प्रेम करता निज पुत्र से, वह तो उसे यत्न से
अनुशासित करता है।
२५ धर्मी जन, मन से खाते और पूर्ण तृप्त होते हैं
किन्तु दुष्ट का पेट तो कभी नहीं भरता है।

१४ १ बुद्धिमान स्त्री अपना घर बनाती है
किन्तु मूर्ख स्त्री अपने ही हाथों से अपना
घर उजाड़ देती है।
२ जिसकी राह सीधी—सच्ची हो, आदर के साथ
वह यहोवा से डरता है, किन्तु वह जिसकी राह
कुटिल है, यहोवा से घृणा करता है।
३ मूर्ख की बातें उसकी पीठ पर डँडे पड़वाती है।
किन्तु बुद्धिमान की वाणी रक्षा करती है।
४ जहाँ बैल नहीं होते, खलिहान खाली रहते हैं,
बैल के बल पर ही भरपूर फसल होती है।
५ एक सच्चा साक्षी कभी नहीं छलता है किन्तु
झूठा गवाह, झूठ उगलता रहता है।
६ उच्छृंखल बुद्धि को खोजता रहता है फिर भी
नहीं पाता है; किन्तु भले—बुरे का बोध जिसको
रहता है, उसके पास ज्ञान सहज में ही आता है।
७ मूर्ख की संगत से दूरी बनाये रख, क्योंकि
उसकी वाणी में तू ज्ञान नहीं पायेगा।
८ ज्ञानी जनों का ज्ञान इसी में है, कि वे अपनी
राहों का चिंतन करें, मूर्खता मूर्ख की छल में बसती
है।
९ पाप के विचारों पर मूर्ख लोग हँसते हैं, किन्तु
सज्जनों में सद्भाव बना रहता है।
१० हर मन अपनी निजी पीड़ा को जानता है, और
उसका दुःख कोई नहीं बाँट पाता है।

---

*१३:९ दुष्ट का दीया यह एक हिब्रू मुहावरा है जिसका अर्थ है अकाल मृत्यु। देखें निर्गमन २०:१२

११ दुष्ट के भवन को ढहा दिया जायेगा, किन्तु
सज्जन का डेरा फूलेगा फलेगा।
१२ ऐसी भी राह होती है जो मनुष्य को उचित
जान पड़ती है ; किन्तु परिणाम में वह मृत्यु को ले
जाती।
१३ हँसते हुए भी मन रोता रह सकता है, और
आनन्द दु:ख में बदल सकता है।
१४ विश्वासहीन को, अपने कुमार्गो का फल
भुगतना पड़ेगा ; और सज्जन सुमार्गो का
प्रतिफल पायेगा।
१५ सरल जन सब कुछ का विश्वास कर लेता है।
किन्तु विवेकी जन सोच—समझकर पैर रखता है।
१६ बुद्धिमान मनुष्य यहोवा से डरता है और
पाप से दूर रहता है। किन्तु मूर्ख मनुष्य बिना
विचार किये उतावला होता है, वह सावधान नहीं
रहता।
१७ ऐसा मनुष्य जिसे शीघ्र क्रोध आता है, वह
मूर्खतापूर्ण काम कर जाता है और वह मनुष्य जो
छल—छंदी होता है वह तो घृणा सभी की पाता
है।
१८ सीधे जनों को बस मूढ़ता मिल पाती किन्तु
बुद्धिमान के सिर ज्ञान का मुकुट होता है।
१९ दुर्जन सज्जनों के सामने सिर झुकायेंगे, और
दुष्ट सज्जन के द्वार माथा नवायेंगे।
२० गरीब को उसके पड़ोसी भी दूर रखते हैं; किन्तु
धनी जन के मित्र बहुत होते हैं।
२१ जो अपने पड़ोसी को तुच्छ मानता है वह
पाप करता है किन्तु जो गरीबों पर दया करता है
वह जन धन्य है।
२२ ऐसे मनुष्य जो षड्यन्त्र रचते हैं क्या भटक
नहीं जाते किन्तु जो भली योजनाएँ रचते हैं, वे जन
तो प्रेम और विश्वास पाते हैं।
२३ परिश्रम के सभी काम लाभ देते हैं, किन्तु
कोरी बकवास बस हानि पहुँचाती है।
२४ विवेकी को प्रतिफल में धन मिलता है पर
मूर्खो की मूर्खता मूढ़ता देती है।
२५ एक सच्चा साक्षी अनेक जीवन बचाता है पर
झूठा गवाह, कपट पूर्ण होता है।
२६ ऐसा मनुष्य जो यहोवा से डरता है, उसके
पास एक संरक्षित गढ़ी होती है। और वहीं उसके
बच्चों को शरण मिलती है।
२७ यहोवा का भय जीवन स्रोत होता है, वह
व्यक्ति को मौत के फंदे से बचाता है।
२८ विस्तृत विशाल प्रजा राजा की महिमा हैं,
किन्तु प्रजा बिना राजा नष्ट हो जाती है।
२९ धैर्यपूर्ण व्यक्ति बहुत समझ बूझ रखता है,
किन्तु ऐसा व्यक्ति जिसे जल्दी से क्रोध आये वह
तो अपनी ही मूर्खता दिखाता है।
३० शान्त मन शरीर को जीवन देता है किन्तु
ईर्ष्या हड्डियों तक को सड़ा देती है।
३१ जो गरीब को सताता है, वह तो सबके
सृजनहार का अपमान करता है। किन्तु वह जो भी
कोई गरीब पर दयालु रहता है, वह परमेश्वर का
आदर करता है।
३२ जब दुष्ट जन पर विपदा पड़ती है तब वह
हार जाते हैं किन्तु धर्मी जन तो मृत्यु में भी विजय
हासिल करते हैं।
३३ बुद्धिमान के मन में बुद्धि का निवास होता
है, और मूर्खो के बीच भी वह निज को जानती है।
३४ नेकी से राष्ट्र का उत्थान होता है ; किन्तु
पाप हर जाति का कलंक होता है।
३५ विवेकी सेवक, राजा की प्रसन्नता है, किन्तु
वह सेवक जो मूर्ख होता है वह उसका क्रोध
जगाता है।

१५ १ कोमल उत्तर से क्रोध शांत होता है
किन्तु कठोर वचन क्रोध को भड़काता है।
२ बुद्धिमान की वाणी ज्ञान की प्रशंसा करती
है, किन्तु मूर्ख का मुख मूर्खता उगलता है।
३ यहोवा की आँख हर कहीं लगी हुई है। वह भले
और बुरे को देखती रहती है।
४ जो वाणी मन के घाव भर देती है, जीवन—
वृक्ष होती है ; किन्तु कपटपूर्ण वाणी मन को कुचल
देती है।
५ मूर्ख अपने पिता की प्रताड़ना का तिरस्कार
करता है किन्तु जो कान सुधार पर देता है
बुद्धिमानी दिखाता है।
६ धर्मी के घर का कोना भरा पूरा रहता है दुष्ट
की कमाई उस पर क्लेश लाती है।
७ बुद्धिमान की वाणी ज्ञान फैलाती है, किन्तु
मूर्खो का मन ऐसा नहीं करता है।
८ यहोवा दुष्ट के चढ़ावे से घृणा करता है किन्तु
उसको सज्जन की प्रार्थना ही प्रसन्न कर देती
है।
९ दुष्टों की राहों से यहोवा घृणा करता है।
किन्तु जो नेकी की राह पर चलते हैं, उनसे वह
प्रेम करता है।
१० उसकी प्रतीक्षा में कठोर दण्ड रहता है जो
पथ—भ्रष्ट हो जाता, और जो सुधार से घृणा
करता है, वह निश्चय मर जाता है।

११ जबकि यहोवा के समक्ष मृत्यु और विनाश
के रहस्य खुले पड़े हैं। सो निश्चित रूप से वह
जानता है कि लोगों के दिल में क्या हो रहा है।
१२ उपहास करने वाला सुधार नहीं अपनाता है।
वह विवेकी से परामर्श नहीं लेता।
१३ मन की प्रसन्नता मुख को चमकाती, किन्तु
मन का दर्द आत्मा को कुचल देता है।
१४ जिस मन को भले बुरे का बोध होता है वह
तो ज्ञान की खोज में रहता है किन्तु मूर्ख का मन,
मूढ़ता पर लगता है।
१५ कुछ गरीब सदा के लिये दुःखी रहते हैं, किन्तु
प्रफुल्लित चित उत्सव मनाता रहता है।
१६ बेचैनी के साथ प्रचुर धन उत्तम नहीं, यहोवा
का भय मानते रहने से थोड़ा भी धन उत्तम है।
१७ घृणा के साथ अधिक भोजन से, प्रेम के साथ
थोड़ा भोजन उत्तम है।
१८ क्रोधी जन मतभेद भड़काता रहता है,
जबकि सहनशील जन झगड़े को शांत करता।
१९ आलसी की राह कांटों से रुधी रहती, जबकि
सज्जन का मार्ग राजमार्ग होता है।
२० विवेकी पुत्र निज पिता को आनन्दित करता
है, किन्तु मूर्ख व्यक्ति निज माता से घृणा करता।
२१ भले—बुरे का ज्ञान जिसको नहीं होता है ऐसे
मनुष्य को तो मूढ़ता सुख देती है, किन्तु समझदार
व्यक्ति सीधी राह चलता है।
२२ बिना परामर्श के योजनायें विफल होती है।
किन्तु वे अनेक सलाहकारों से सफल होती है।
२३ मनुष्य उचित उत्तर देने से आनन्दित होता
है। यथोचित समय का वचन कितना उत्तम होता
है।
२४ विवेकी जन को जीवन—मार्ग ऊँचे से ऊँचा
ले जाता है, जिससे वह मृत्यु के गर्त में नीचे गिरने
से बचा रहे।
२५ यहोवा अभिमानी के घर को छिन्न—भिन्न
करता है ; किन्तु वह विवश विधवा के घर की सीमा
बनाये रखता है।
२६ दुष्टों के विचारों से यहोवा को घृणा है, पर
सज्जनों के विचार उसको सदा भाते हैं।
२७ लालची मनुष्य अपने घराने पर विपदा लाता
है किन्तु वही जीवित रहता है जो जन घूस से घृणा
भाव रखता है।
२८ धर्मी जन का मन तौल कर बोलता है किन्तु
दुष्ट का मुख, बुरी बात उगलता है।
२९ यहोवा दुष्टों से दूर रहता है, अति दूर; किन्तु
वह धर्मी की प्रार्थना सुनता है।
३० आनन्द भरी मन को हर्षाता, अच्छा समाचार
हड्डियों तक हर्ष पहुँचाता है।
३१ जो जीवनदायी डाँट सुनता है, वही
बुद्धिमान जनों के बीच चैन से रहेगा।
३२ ऐसा मनुष्य जो प्रताड़ना की उपेक्षा करता,
वह तो विपत्ति को स्वयं अपने आप पर बुलाता है ;
किन्तु जो ध्यान देता है सुधार पर, समझ—बूझ
पाता है।
३३ यहोवा का भय लोगों को ज्ञान सिखाता है।
आदर प्राप्त करने से पहले नम्रता आती है।

१६ १ मनुष्य तो निज योजना को रचता है,
किन्तु उन्हें यहोवा ही कार्य रूप देता है।
२ मनुष्य को अपनी राहें पाप रहित लगती है
किन्तु यहोवा उसकी नियत को परखता है।
३ जो कुछ तू यहोवा को समर्पित करता है तेरी
सारी योजनाएँ सफल होंगी।
४ यहोवा ने अपने उद्देश्य से हर किसी वस्तु को
रचा है यहाँ तक कि दुष्ट को भी नाश के दिन के
लिये।
५ जिनके मन में अहंकार भरा हुआ है, उनसे
यहोवा घृणा करता है। इसे तू सुनिश्चित जान, कि
वे बिना दण्ड पाये नहीं बचेगें।
६ खरा प्रेम और विश्वास शुद्ध बनाती है,
यहोवा का आदर करने से तू बुराई से बचेगा।
७ यहोवा को जब मनुष्य की राहें भाती हैं, वह
उसके शत्रुओं को भी साथ शांति से रहने को
मित्र बना देता।
८ अन्याय से मिले अधिक की अपेक्षा, नेकी के
साथ थोड़ा मिला ही उत्तम है।
९ मन में मनुष्य निज राहें रचता है, किन्तु प्रभु
उसके चरणों को सुनिचश्चित करता है।
१० राजा जो बोलता नियम बन जाता है उसे
चाहिए वह न्याय से नहीं चूके।
११ खरे तराजू और माप यहोवा से मिलते हैं, उसी
ने ये सब थैली के बट्टे रचे हैं। ताकि कोई किसी
को छले नहीं।
१२ विवेकी राजा, बुरे कर्मो से घृणा करता है
क्योंकि नेकी पर ही सिंहासन टिकता है।
१३ राजाओं को न्याय पूर्ण वाणी भाती है, जो जन
सत्य बोलता है, वह उसे ही मान देता है।
१४ राजा का कोप मृत्यु का दूत होता है किन्तु
ज्ञानी जन से ही वह शांत होगा।
१५ राजा जब आनन्दित होता है तब सब का
जीवन उत्तम होता है, अगर राजा तुझ से खुश है
तो वह वासंती के वर्षा सी है।

१६ विवेक सोने से अधिक उत्तम है, और समझ
बूझ पाना चाँदी से उत्तम है।
१७ सज्जनों का राजमार्ग बदी से दूर रहता है।
जो अपने राह की चौकसी करता है, वह अपने
जीवन की रखवाली करता है।
१८ नाश आने से पहले अहंकार आ जाता और
पतन से पहले चेतना हठी हो जाती।
१९ धनी और स्वाभिमानी लोगों के साथ सम्पत्ति
बाँट लेने से, दीन और गरीब लोगों के साथ रहना
उत्तम है।
२० जो भी सुधार संस्कार पर ध्यान देगा
फूलेगा—फलेगा ; और जिसका भरोसा यहोवा पर
है वही धन्य है।
२१ बुद्धिशील मन वाले समझदार कहलाते,
और ज्ञान को मधुर शब्दों से बढ़ावा मिलता है।
२२ जिनके पास समझ बूझ है, उनके लिए समझ
बूझ जीवन स्रोत होती है, किन्तु मूर्खो की मूढ़ता
उनको दण्ड दिलवाती।
२३ बुद्धिमान का हृदय उसकी वाणी को
अनुशासित करता है, और उसके होंठ शिक्षा को
बढ़ावा देते हैं।
२४ मीठी वाणी छत्ते के शहद सी होती है, एक
नयी चेतना भीतर तक भर देती है।
२५ मार्ग ऐसा भी होता जो उचित जान पड़ता
है, किन्तु परिणाम में वह मृत्यु को जाता है।
२६ काम करने वाले की भूख भरी इच्छाएँ उससे
काम करवाती रहती हैं। यह भूख ही उस को आगे
धकेलती है।
२७ बुरा मनुष्य षडयन्त्र रचता है, और उसकी
वाणी ऐसी होती है जैसे झुलसाती आग।
२८ उत्पाती मनुष्य मतभेद भड़काता है, और
बेपैर बातें निकट मित्रों को फोड़ देती है।
२९ अपने पड़ोसी को वह हिंसक फँसा लेता है
और कुमार्ग पर उसे खींच ले जाता है। ३० जब भी
मनुष्य आँखों से इशारा करके मुस्कुराता है, वह
गलत और बुरी योजनाऐं रचता रहता है।
३१ श्वेत केश महिमा मुकुट होते हैं जो धर्मी
जीवन से प्राप्त होते हैं।
३२ धीर जन किसी योद्धा से भी उत्तम हैं, और
जो क्रोध पर नियंत्रण रखता है, वह ऐसे मनुष्य
से उत्तम होता है जो पूरे नगर को जीत लेता है।
३३ पासा तो झोली में फेंक दिया जाता है, किन्तु
उसका हर निर्णय यहोवा ही करता है।

१७ १ झंझट झमेलों भरे घर की दावत से चैन
और शान्ति का सूखा रोटी का टुकड़ा
उत्तम है।
२ बुद्धिमान दास एक ऐसे पुत्र पर शासन
करेगा जो घर के लिए लज्जाजनक होता है।
बुद्धिमान दास वह पुत्र के जैसा ही उत्तराधिकार
पानें में सहभागी होगा।
३ जैसे चाँदी और सोने को परखने शोधने
कुठाली और आग की भट्टी होती है वैसे ही
यहोवा हृदय को परखता शोधता है।
४ दुष्ट जन, दुष्ट की वाणी को सुनता है,
मिथ्यावादी बैर भरी वाणी पर ध्यान देता।
५ ऐसा मनुष्य जो गरीब की हंसी उड़ाता, उसके
सृजनहार से वह घृणा दिखाता है। वह दुःख में खुश
होता है।
६ नाती—पोते वृद्ध जन का मुकुट होते हैं, और
माता—पिता उनके बच्चों का मान हैं।
७ मूर्ख को जैसे अधिक बोलना नहीं सजता है
वैसे ही गरिमापूर्ण व्यक्ति को झूठ बोलना नहीं
सजता।
८ घूंस देने वाले की घूंस महामंत्र जैसे लगती
है, जिससे वह जहाँ भी जायेगा, सफल ही हो
जायेगा।
९ वह जो बुरी बात पर पर्दा डाल देता है,
उघाड़ता नहीं है, प्रेम को बढ़ाता है। किन्तु जो
बात को उघाड़ता ही रहता है, गहरे दोस्तों में फूट
डाल देता है।
१० विवेकी को धमकाना उतना ही प्रभावित
करता है जितना मूर्ख को सौ—सौ कोड़े भी नहीं
करते।
११ दुष्ट जन तो बस सदा विद्रोह करता रहता,
उसके लिये दया हीन अधिकारी भेजा जायेगा।
१२ अपनी मूर्खता में चूर किसी मूर्ख से मिलने
से अच्छा है, उस रीछनी से मिलना जिससे उसके
बच्चों को छीन लिया गया हो।
१३ भलाई के बदले में यदि कोई बुराई करे तो
उसके घर को बुराई नहीं छोड़ेगी।
१४ झगड़ा शुरू करना ऐसा है जैसे बाँध का
टूटना है, इसलिये इसके पहले कि तकरार शुरू हो
जाये बात खत्म करो।
१५ यहोवा इन दोनों ही बातों से घृणा करता है,
दोषी को छोड़ना, और निर्दोष को दण्ड देना।
१६ मूर्ख के हाथों में धन का क्या प्रयोजन!
क्योंकि, उसको चाह नहीं कि बुद्धि को मोल ले।
१७ मित्र तो सदा—सर्वदा प्रेम करता है बुरे
दिनों को काम आने का बंधु बन जाता है।
१८ विवेक हीन जन ही शपथ से हाथ बंधा लेता
और अपने पड़ोसी का ऋण ओढ़ लेता है।

१९ जिसको लड़ाई—झगड़ा भाता है, वह तो
केवल पाप से प्रेम करता है और जो डींग हांकता
रहता है वह तो अपना ही नाश बुलाता है।
२० कुटिल हृदय जन कभी फूलता फलता नहीं
है और जिस की वाणी छल से भरी हुई है, विपदा
में गिरता है।
२१ मूर्ख पुत्र पिता के लिये पीड़ा लाता है, मूर्ख
के पिता को कभी आनन्द नहीं होता।
२२ प्रसन्न चित रहना सबसे बड़ी दवा है, किन्तु
बुझा मन हड्डियों को सुखा देता है।
२३ दुष्ट जन, उसके मार्ग से न्याय को डिगाने
एकांत में घूंस लेता है।
२४ बुद्धिमान जन बुद्धि को सामने रखता है,
किन्तु मूर्ख की आँखें धरती के छोरों तक भटकती
हैं।
२५ मूर्ख पुत्र पिता को तीव्र व्यथा देता है, और
माँ के प्रति जिसने उसको जन्म दिया, कड़ुवाहट
भर देता।
२६ किसी निर्दोष को दण्ड देना उचित नहीं,
ईमानदार नेता को पीटना उचित नहीं है।
२७ ज्ञानी जन शब्दों को तोल कर बोलता है,
समझ—बूझ वाला जन स्थित प्रज्ञ होता है।
२८ मूर्ख भी जब तक नहीं बोलता शोभता है।
और यदि निज वाणी रोके रखे तो ज्ञानी जाना
जाता है।

१८ १ मित्रता रहित व्यक्ति अपने स्वार्थ
साधता है। वह समझदारी की बातें नकार
देता है।
२ मूर्ख सुख वह शेखचिल्ली बनने में लेता है।
सोचता नहीं है कभी वे पूर्ण होंगी या नहीं। सुख
उसे समझदारी के बातें नहीं देती।
३ दुष्टता के साथ—साथ घृणा भी आती है और
निन्दा के साथ अपमान।
४ बुद्धिमान के शब्द गहरे जल से होते हैं, वे
बुद्धि के स्रोत से उछलते हुए आते हैं।
५ दुष्ट जन का पक्ष लेना और निर्दोष को न्याय
से वंचित रखना उचित नहीं होता।
६ मूर्ख की वाणी झंझटों को जन्म देती है और
उसका मुख झगड़ों को न्योता देता है।
७ मूर्ख का मुख उसका काम को बिगाड़ देता है
और उसके अपने ही होठों के जाल में उसका प्राण
फँस जाता है।
८ लोग हमेशा कानाफूसी करना चाहते हैं, यह
उत्तम भोजन के समान है जो पेट के भीतर उतरता
चला जाता है।
९ जो अपना काम मंद गति से करता है, वह
उसका भाई है, जो विनाश करता है।
१० यहोवा का नाम एकगढ़ सुदृढ़ है। उस ओर
धर्मी बढ़ जाते हैं और सुरक्षित रहते हैं।
११ धनिक समझते हैं कि उनका धन उन्हें बचा
लेगा— वह समझते हैं कि वह एक सुरक्षित किला
है।
१२ पतन से पहले मन अहंकारी बन जाता, किन्तु
सम्मान से पूर्व विनम्रता आती है।
१३ बात को बिना सुने ही, जो उत्तर में बोल
पड़ता है, वह उसकी मूर्खता और उसका अपयश
है।
१४ मनुष्य का मन उसे व्याधि में थामें रखता
किन्तु टूटे मन को भला कोई कैसे थामे।
१५ बुद्धिमान का मन ज्ञान को प्राप्त करता है।
बुद्धिमान के कान इसे खोज लेते हैं।
१६ उपहार देने वाले का मार्ग उपहार खोलता है
और उसे महापुरुषों के सामने पहुँचा देता।
१७ पहले जो बोलता है ठीक ही लगता है किन्तु
बस तब तक ही जब तक दूसरा उससे प्रश्न नहीं
करता है।
१८ यदि दो शक्तिशाली आपस में झगड़ते हों,
उत्तम हैं कि उनके झगड़े को पासे फेंक कर
निपटाना।
१९ किसी दृढ़ नगर को जीत लेने से भी रूठे हुए
बन्धु को मनाना कठिन है, और आपसी झगड़े होते
ऐसे जैसे गढ़ी के मुंदे द्वार होते हैं।
२० मनुष्य का पेट उसके मुख के फल से ही भरता
है, उसके होठों की खेती का प्रतिफल उसे मिला
है।
२१ वाणी जीवन, मृत्यु की शक्ति रखती है, और
जो वाणी से प्रेम रखते है, वे उसका फल खाते हैं।
२२ जिसको पत्नी मिली है, वह उत्तम पदार्थ
पाया है। उसको यहोवा का अनुग्रह मिलता है।
२३ गरीब जन तो दया की मांग करता है, किन्तु
धनी जन तो कठोर उत्तर देता है।
२४ कुछ मित्र ऐसे होते हैं जिनका साथ मन को
भाता है किन्तु अपना घनिष्ठ मित्र भाई से भी
उत्तम हो सकता है।

१९ १ वह गरीब श्रेष्ठ है, जो निष्कलंक रहता ;
न कि वह मूर्ख जिसकी कुटिलतापूर्ण वाणी
है।
२ ज्ञान रहित उत्साह रखना अच्छा नहीं है
इससे उतावली में गलती हो जाती है।

३ मनुष्य अपनी ही मूर्खता से अपनी जीवन
बिगाड़ लेता है, किन्तु वह यहोवा को दोषी
ठहराता है।
४ धन से बहुत सारे मित्र बन जाते हैं, किन्तु
गरीब जन को उसका मित्र भी छोड़ जाता है।
५ झूठा गवाह बिना दण्ड पाये नहीं बचेगा और
जो झूठ उगलता रहता है, छूटने नहीं पायेगा।
६ उसके बहुत से मित्र बन जाना चाहते हैं, जो
उपहार देता रहता है।
७ निर्धन के सभी सम्बंधी उससे कतराते हैं।
उसके मित्र उससे कितना बचते फिरते हैं, यद्यपि
वह उन्हें अनुनय—विनय से मनाता रहता है
किन्तु वे उसे कहीं मिलते ही नहीं हैं।
८ जो ज्ञान पाता है वह अपने ही प्राण से प्रीति
रखता, वह जो समझ बूझ बढ़ाता रहता है फलता
और फूलता है।
९ झूठा गवाह दण्ड पाये बिना नहीं बचेगा, और
वह, जो झूठ उगलता रहता है ध्वस्त हो जायेगा।
१० मूर्ख धनी नहीं बनना चाहिये। वह ऐसे होगा
जैसे कोई दास युवराजाओं पर राज करें।
११ अगर मनुष्य बुद्धिमान हो उसकी बुद्धि उसे
धीरज देती है। जब वह उन लोगों को क्षमा करता
है जो उसके विरूद्ध हो, तो अच्छा लगता है।
१२ राजा का क्रोध सिंह की दहाड़ सा है, किन्तु
उसकी कृपा घास पर की ओस की बूंद सी होती।
१३ मूर्ख पुत्र विनाश का बाढ़ होता है ; अपने
पिता के लिए और पत्नी के नित्य झगड़े हर दम
का टपका है।
१४ भवन और धन दौलत माँ बाप से दान में मिल
जाते ; किन्तु बुद्धिमान पत्नी यहोवा से मिलती
है।
१५ आलस्य गहन घोर निद्रा देता है किन्तु वह
आलसी भूखा मरता है।
१६ ऐसा मनुष्य जो निर्देशों पर चलता वह
अपने जीवन की रखवाली करता है। किन्तु जो
सदुपदेशों उपेक्षा करता है वह मृत्यु अपनाता है।
१७ गरीब पर कृपा दिखाना यहोवा को उधार देना
है, यहोवा उसे, उसके इस कर्म का प्रतिफल देगा।
१८ तू अपने पुत्र को अनुशासित कर और उसे
दण्ड दे, जब वह अनुचित हो। बस यही आशा है।
यदि तू ऐसा करने को मना करे, तब तो तू उसके
विनाश में उसका सहायक बनता है।
१९ यदि किसी मनुष्य को तुरंत क्रोध आयेगा,
उसको इसका मूल्य चुकाना होगा। यदि तू उसकी
रक्षा करता है, तो कितना ही बार तुझे उसको
बचाना होगा।
२० सुमति पर ध्यान दे और सुधार को अपना ले
तू जिससे अंत में तू बुद्धिमान बन जाये।
२१ मनुष्य अपने मन में क्या—क्या! करने की
सोचता है किन्तु यहोवा का उद्देश्य पूरा होता है।
२२ लोग चाहते हैं व्यक्ति विश्वास योग्य और
सच्चा हो, इसलिए गरीबी में विश्वासयोग्य
बनकर रहना अच्छा है। ऐसा व्यक्ति बनने से
जिस पर कोई विश्वास न करे।
२३ यहोवा का भय सच्चे जीवन की राह
दिखाता, इससे व्यक्ति शांति पाता है और कष्ट
से बचता है।
२४ आलसी का हाथ चाहे थाली में रखा हो
किन्तु वह उसको मुँह तक नहीं ला सकता।
२५ उच्छृंखल को पीट, जिससे सरल जन बुद्धि
पाये बुद्धिमान को डाँट, वह और ज्ञान पायेगा।
२६ ऐसा पुत्र जो निन्दनीय कर्म करता है घर
का अपमान होता है, वह ऐसा होता है जैसे पुत्र
कोई निज पिता से छीने और घर से असहाय माँ
को निकाल बाहर करे।
२७ मेरे पुत्र यदि तू अनुशासन पर ध्यान देना
छोड़ देगा, तो तू ज्ञान के वचनों से भटक जायेगा।
२८ भ्रष्ट गवाह न्याय की हँसी उड़ाता है, और
दुष्ट का मुख पाप को निगल जाता।
२९ उच्छृंखल दण्ड पायेगा, और मूर्ख जन की
पीठ कोड़े खायेगी।

२० १ मदिरा और यवसुरा लोगों को काबू में
नहीं रहने देते। वह मजाक उड़वाती है और
झगड़े करवाती है। वह मदमस्त हो जाते हैं और
बुद्धिहीन कार्य करते हैं।
२ राजा का सिंह की दहाड़ सा कोप होता है, जो
उसे कुपित करता प्राण से हाथ धोता है।
३ झगड़ो से दूर रहना मनुष्य का आदर है ; किन्तु
मूर्ख जन तो सदा झगड़े को तत्पर रहते।
४ ऋतु आने पर अदूरदर्शी आलसी हल नहीं
डालता है सो कटनी के समय वह ताकता रह
जाता है और कुछ भी नहीं पाता है।
५ जन के मन प्रयोजन, गहन जल से छिपे होते
किन्तु समझदार व्यक्ति उन्हें बाहर खींच लाता है।
६ लोग अपनी विश्वास योग्यता का बहुत ढोल
पीटते हैं, किन्तु विश्वसनीय जन किसको मिल
पाता है
७ धर्मी जन निष्कलंक जीवन जीता है उसके
बाद आनेवाली संतानें धन्य हैं।
८ जब राजा न्याय को सिंहासन पर विराजता
अपनी दृष्टि मात्र से बुराई को फटक छांटता है।

९ कौन कह सकता है "मैंने अपना हृदय पवित्र
रखा है, मैं विशुद्ध, और पाप रहित हूँ।"
१० इन दोनों से, खोटे बाटों और खोटी नापों से
यहोवा घृणा करता है।
११ बालक भी अपने कर्मो से जाना जाता है, कि
उसका चालचलन शुद्ध है, या नहीं।
१२ यहोवा ने कान बनाये हैं कि हम सुनें! यहोवा
ने आँखें बनाई हैं कि हम देखें! यहोवा ने इन दोनों
को इसलिये हमारे लिये बनाया।
१३ निद्रा से प्रेम मत कर दरिद्र हो जायेगा;
तू जागता रह तेरे पास भरपूर भोजन होगा।
१४ ग्राहक खरीदते समय कहता है, "अच्छा
नहीं, बहुत महंगा!" किन्तु जब वहाँ से दूर चला
जाता है अपनी खरीद की शेखी बघारता है।
१५ सोना बहुत है और मणि माणिक बहुत सारे
हैं, किन्तु ऐसे अधर जो बातें ज्ञान की बताते दुर्लभ
रत्न होते हैं।
१६ जो किसी अजनबी के ऋण की जमानत देता
है वह अपने वस्त्र तक गंवा बैठता है।
१७ छल से कमाई रोटी मीठी लगती है पर अंत
में उसका मुंह कंकड़ों से भर जाता।
१८ योजनाएँ बनाने से पहले तू उत्तम सलाह पा
लिया कर। यदि युद्ध करना हो तो उत्तम लोगों से
आगुवाई लें।
१९ बकवादी विश्वास को धोखा देता है सो, उस
व्यक्ति से बच जो बहुत बोलता हो।
२० कोई मनुष्य यदि निज पिता को अथवा निज
माता को कोसे, उसका दीया बुझ जायेगा और
गहन अंधकार हो जायेगा।
२१ यदि तेरी सम्पत्ति तुझे आसानी से मिल गई
हो तो वह तुझे अधिक मूल्यवान नहीं लगेगा।
२२ इस बुराई का बदला मैं तुझसे लूँगा। ऐसा
तू मत कह; यहोवा की बाट जोह तुझे वही मुक्त
करेगा।
२३ यहोवा खोटे—झूठे बाटों से घृणा करता है
और उसको खोटे नाप नहीं भाते हैं।
२४ यहोवा निर्णय करता है कि हर एक मनुष्य के
साथ क्या घटना चाहिये। कोई मनुष्य कैसा समझ
सकता है कि उसके जीवन में क्या घटने वाला है।
२५ यहोवा को कुछ अर्पण करने की प्रतिज्ञा से
पूर्व ही विचार ले; भली भांति विचार ले। सम्भव
है यदि तू बाद में ऐसा सोचे, "अच्छा होता मैं वह
मन्नत न मानता।"
२६ विवेकी राजा यह निर्णय करता है कि कौन
बुरा जन है। और वह राजा उस जन को दण्ड देगा।
२७ यहोवा का दीपक जन की आत्मा को जाँच
लेता, और उसके अन्तरात्मा स्वरूप को खोज लेता
है।
२८ राजा को सत्य और निष्ठा सुरक्षित रखते,
किन्तु उसका सिंहासन करुणा पर टिकता है।
२९ युवकों की महिमा उनके बल से होती है और
वृद्धों का गौरव उनके पके बाल हैं।
३० यदि हमें दण्ड दिया जाये तो हम बुरा करना
छोड़ देते हैं। दर्द मनुष्य का परिवर्तन कर सकता
है।

२१ १ राजाओं का मन यहोवा के हाथ होता,
जहाँ भी वह चाहता उसको मोड़ देता है
वैसे ही जैसे कोई कृषक खेत का पानी।
२ सबको अपनी—अपनी राहें उत्तम लगती हैं
किन्तु यहोवा तो मन को तौलता है।
३ तेरा उस कर्म का करना जो उचित और नेक है
यहोवा को अधिक चढ़ावा चढ़ाने से ग्राह्य है।
४ गर्वीली आँखें और दर्पीला मन पाप हैं ये दुष्ट
की दुष्टता को प्रकाश में लाते हैं।
५ परिश्रमी की योजनाएँ लाभ देती हैं यह वैसे
ही निश्चित है जैसे उतावली से दरिद्रता आती
है।
६ झूठ बोल—बोल कर कमाई धन दौलत भाप
सी अस्थिर है, और वह घातक फंदा बन जाती है।
७ दुष्ट की हिंसा उन्हें खींच ले डूबेगी क्योंकि वे
उचित कर्म करना नहीं चाहते।
८ अपराधी का मार्ग कुटिलता — पूर्ण होता है
किन्तु जो सज्जन हैं उसकी राह सीधी होती हैं।
९ झगड़ालू पत्नी के संग घर में निवास से, छत
के किसी कोने पर रहना अच्छा है।
१० दुष्ट जन सदा पाप करने को इच्छुक रहता,
उसका पड़ोसी उससे दया नहीं पाता।
११ जब उच्छृंखल दण्ड पाता है तब सरल जन को
बुद्धि मिल जाती है; किन्तु बुद्धिमान तो सुधारे
जाने पर ही ज्ञान को पाता है।
१२ न्यायपूर्ण परमेश्वर दुष्ट के घर पर आँख
रखता है, और दुष्ट जन का वह नाश कर देता है।
१३ यदि किसी गरीब की, करुणा पुकार पर कोई
मनुष्य निज कान बंद करता है, तो वह जब
पुकारेगा उसकी पुकार भी नहीं सुनी जायेगी।
१४ गुप्त रुप से दिया गया उपहार क्रोध को
शांत करता, और छिपा कर दी गई घूंस भयंकर
क्रोध शांत करती है।
१५ न्याय जब पूर्ण होता धर्मी को सुख होता,
किन्तु कुकर्मियों को महा भय होता है।

१६ जो मनुष्य समझ—बूझ के पथ से भटक
जाता है, वह विश्राम करने के लिये मृतकों का
साथी बनता है।
१७ जो सुख भोगों से प्रेम करता रहता वह
दरिद्र हो जायेगा, और जो मदिरा का प्रेमी है,
तेल का कभी धनी नहीं होगा।
१८ दुर्जन को उन सभी बुरी बातों का फल
भुगतना ही पड़ेगा, जो सज्जन के विरुद्ध करते
हैं। बेईमान लोगों को उनके किये का फल भुगतना
पड़ेगा जो इमानदार लोगों के विरुद्ध करते हैं।
१९ चिड़चिड़ी झगड़ालू पत्नी के संग रहने से
निर्जन बंजर में रहना उत्तम है।
२० विवेकी के घर में मन चीते भोजन और प्रचुर
तेल के भंडार भरे होते हैं किन्तु मूर्ख व्यक्ति जो
उसके पास होता है, सब चट कर जाता है।
२१ जो जन नेकी और प्रेम का पालन करता
है, वह जीवन, सम्पन्नता और समादर को प्राप्त
करता है।
२२ बुद्धिमान जन को कुछ भी कठिन नहीं है।
वह ऐसे नगर पर भी चढ़ायी कर सकता है जिसकी
रखवाली शूरवीर करते हों, वह उस परकोटे को
ध्वस्त कर सकता है जिसके प्रति वे अपनी सुरक्षा
को विश्वस्त थे।
२३ वह जो निज मुख को और अपनी जीभ को
वश में रखता वह अपने आपको विपत्ति से बचाता
है।
२४ ऐसे मनुष्य अहंकारी होता, जो निज को
औरों से श्रेष्ठ समझता है, उस का नाम ही
"अभिमानी" होता है। अपने ही कर्मो से वह दिखा
देता है कि वह दुष्ट होता है।
२५ आलसी पुरूष के लिये उसकी ही लालसाएँ
उसके मरण का कारण बन जाती हैं क्योंकि उसके
हाथ कर्म को नहीं अपनाते।
२६ दिन भर वह चाहता ही रहता यह उसको और
मिले, और किन्तु धर्मी जन तो बिना हाथ खींचे देता
ही रहता है।
२७ दुष्ट का चढ़ावा यूँ ही घृणापूर्ण होता है फिर
कितना बुरा होगा जब वह उसे बुरे भाव से चढ़ावे
२८ झूठे गवाह का नाश हो जायेगा ; और जो
उसकी झूठी बातों को सुनेगा वह भी उस ही के
संग सदा सर्वदा के लिये नष्ट हो जायेगा।
२९ सज्जन तो निज कर्मो पर विचार करता है
किन्तु दुर्जन का मुख अकड़ कर दिखाता है।
३० यदि यहोवा न चाहें तो, न ही कोई बुद्धि और
न ही कोई अर्न्तदृष्टि, न ही कोई योजना पूरी हो
सकती है।
३१ युद्ध के दिन को घोड़ा तैयार किया है, किन्तु
विजय तो बस यहोवा पर निर्भर है।

२२ १ अच्छा नाम अपार धन पाने से योग्य है।
चाँदी, सोने से, प्रशंसा का पात्र होना
अधिक उत्तम है।
२ धनिकों में निर्धनों में यह एक समता है, यहोवा
ही इन सब ही का सिरजन हार है।
३ कुशल जन जब किसी विपत्ति को देखता है,
उससे बचने के लिये इधर उधर हो जाता किन्तु मूर्ख
उसी राह पर बढ़ता ही जाता है। और वह इसके
लिये दु:ख ही उठाता है।
४ जब व्यक्ति विनम्र होता है यहोवा का भय
धन दौलत, आदर और जीवन उपजता है।
५ कुटिल की राहें काँटों से भरी होती है और वहाँ
पर फंदे फैले होते हैं; किन्तु जो निज आत्मा की
रक्षा करता है वह तो उनसे दूर ही रहता है।
६ बच्चे को यहोवा की राह पर चलाओ वह
बुढ़ापे में भी उस से भटकेगा नहीं।
७ धनी दरिद्रों पर शासन करते हैं। उधार लेने
वाला, देनेवालों का दास होता है।
८ ऐसा मनुष्य जो दुष्टता के बीज बोता है वह
तो संकट की फसल काटेगा ; और उसकी क्रोध
की लाठी नष्ट हो जायेगी।
९ उदार मन का मनुष्य स्वयं ही धन्य होगा,
क्योंकि वह गरीब जन के साथ बाँट कर खाता है।
१० निन्दक को दूर कर तो कलह दूर होगा। इससे
झगड़े और अपमान मिट जाते हैं।
११ वह जो पवित्र मन को प्रेम करता है और
जिसकी वाणी मनोहर होती है उसका तो राजा भी
मित्र बन जाता है।
१२ यहोवा सदा ज्ञान का ध्यान रखता है ; किन्तु
वह विश्वासघाती के वचन विफल करता।
१३ काम नहीं करने के बहाने बनाता हुआ आलसी
कहता है, "बाहर बैठा है सिंह" या "गलियों में मुझे
मार डाला जायेगा।"
१४ व्यभिचार का पाप ऐसा होता है जैसे हो कोई
जाल। यहोवा उसके बहुत कुपित होगा जो भी इस
जाल में गिरेगा।
१५ बच्चे शैतानी करते रहते हैं किन्तु अनुशासन
की छड़ी ही उनको दूर कर देती।
१६ ऐसा मनुष्य जो अपना धन बढ़ाने गरीब को
दबाता है ; और वह, जो धनी को उपहार देता, दोनों
ही ऐसे जन निर्धन हो जाते हैं।

तीस विवेकपूर्ण कहावतें

१७ बुद्धिमान की कहावतें सुनों और ध्यान दो।
उस पर ध्यान लगाओं जो मैं सिखाता हूँ। १८ तू
यदि उनको अपने मन में बसा ले तो बहुत अच्छा
होगा ; तू उन्हें हरदम निज होठों पर तैयार रख।
१९ मैं तुझे आज उपदेश देता हूँ ताकि तेरा यहोवा
पर विश्वास पैदा हो। २० ये तीस शिक्षाएँ मैंने तेरे
लिये रची, ये वचन सन्मति के और ज्ञान के हैं। २१ वे
बातें जो महत्वपूर्ण होती, ये सत्य वचन तुझको
सिखायेगें ताकि तू उसको उचित उत्तर दे सके,
जिसने तुझे भेजा है।

— १ —

२२ तू गरीब का शोषण मत कर। इसलिये कि
वे बस दरिद्र हैं; और अभावग्रस्त को कचहरी
में मत खींच। २३ क्योंकि परमेश्वर उनकी सुनवाई
करेगा और जिन्होंने उन्हें लूटा है वह उन्हें लूट
लेगा।

— २ —

२४ तू क्रोधी स्वभाव के मनुष्यों के साथ कभी
मित्रता मत कर और उसके साथ, अपने को मत
जोड़ जिसको शीघ्र क्रोध आ जाता है। २५ नहीं
तो तू भी उसकी राह चलेगा और अपने को जाल
में फँसा बैठेगा।

— ३ —

२६ तू ज़मानत किसी के ऋण की देकर अपने
हाथ मत कटा। २७ यदि उसे चुकाने में तेरे साधन
चुकेंगे तो नीचे का बिस्तर तक तुझसे छिन
जायेगा।

— ४ —

२८ तेरी धरती की सम्पत्ति जिसकी सीमाएँ तेरे
पूर्वजों ने निर्धारित की उस सीमा रेखा को कभी
भी मत हिला।

— ५ —

२९ यदि कोई व्यक्ति अपने कार्य में कुशल है, तो
वह राजा की सेवा के योग्य है। ऐसे व्यक्तियों के
लिये जिनका कुछ महत्व नहीं उसको कभी काम
नहीं करना पड़ेगा।

— ६ —

२३ १ जब तू किसी अधिकारी के साथ भोजन
पर बैठे तो इसका ध्यान रख, कि कौन तेरे
सामने है। २ यदि तू पेटू है तो खाने पर नियन्त्रण
रख। ३ उसके पकवानों की लालसा मत कर क्योंकि
वह भोजन तो कपटपूर्ण होता है।

— ७ —

४ धनवान बनने का काम करके निज को मत
थका। तू संयम दिखाने को, बुद्धि अपना ले। ५ ये
धन सम्पत्तियाँ देखते ही देखते लुप्त हो जायेंगी
निश्चय ही अपने पंखों को फैलाकर वे गरूड़ के
समान आकाश में उड़ जायेंगी।

— ८ —

६ ऐसे मनुष्य का जो सूम भोजन होता है तू मत
कर; तू उसके पकवानों को मत ललचा। ७ क्योंकि
वह ऐसा मनुष्य है जो मन में हरदम उसके मूल्य
का हिसाब लगाता रहता है ; तुझसे तो वह कहता
— "तुम खाओ और पियो" किन्तु वह मन से तेरे
साथ नहीं है। ८ जो कुछ थोड़ा बहुत तू उसका खा
चुका है, तुझको तो वह भी उलटना पड़ेगा और वे
तेरे कहे हुए आदर पूर्ण वचन व्यर्थ चले जायेंगे।

— ९ —

९ तू मूर्ख के साथ बातचीत मत कर, क्योंकि वह
तेरे विवेकपूर्ण वचनों से घृणा ही करेगा।

— १० —

१० पुरानी सम्पत्ति की सीमा जो चली आ रही
हो, उसको कभी मत हड़प। ऐसी जमीन को जो
किसी अनाथ की हो। ११ क्योंकि उनका संरक्षक
सामर्थ्यवान है, तेरे विरुद्ध उनका मुकदमा वह
लड़ेगा।

— ११ —

१२ तू अपना मन सीख की बातों में लगा। तू
ज्ञानपूर्ण वचनों पर कान दे।

— १२ —

१३ तू किसी बच्चे को अनुशासित करने से कभी
मत रूक यदि तू कभी उसे छड़ी से दण्ड देगा तो
वह इससे कभी नहीं मरेगा। १४ तू छड़ी से पीट उसे
और उसका जीवन नरक से बचा ले।

— १३ —

१५ हे मेरे पुत्र, यदि तेरा मन विवेकपूर्ण रहता
है तो मेरा मन भी आनन्दपूर्ण रहेगा। १६ और तेरे
होंठ जब जो उचित बोलते हैं, उससे मेरा अर्न्तमन
खिल उठता है।

— १४ —

१७ तू अपने मन को पापपूर्ण व्यक्तियों से ईर्ष्या
मत करने दे, किन्तु तू यहोवा से डरने का जितना
प्रयत्न कर सके, कर। १८ एक आशा है, जो सदा
बनी रहती है और वह आशा कभी नहीं मरती।

— १५ —

१९ मेरे पुत्र, सुन! और विवेकी बन जा और
अपनी मन को नेकी की राह पर चला। २० तू
उनके साथ मत रह जो बहुत पियक्कड़ हैं, अथवा
ऐसे, जो ठूंस—ठूंस माँस खाते हैं। २१ क्योंकि ये
पियक्कड़ और ये पेटू दरिद्र हो जायेंगे, और यह
उनकी खुमारी, उन्हें चिथड़े पहनायेगी।

— १६ —

२२ अपने पिता की सुन जिसने तुझे जीवन दिया
है, अपनी माता का निरादर मत कर जब वह वृद्ध
हो जाये। २३ वह वस्तु सत्य है, तू इसको किसी भी
मोल पर खरीद ले। ऐसे ही विवेक, अनुशासन और
समझ भी प्राप्त कर; तू इनको कभी भी किसी
मोल पर मत बेच। २४ नेक जन का पिता महा
आनन्दित रहता और जिसका पुत्र विवेक पूर्ण
होता है वह उसमें ही हर्षित रहता है। २५ इसलिये
तेरी माता और तेरे पिता को आनन्द प्राप्त करने
दे और जिसने तुझ को जन्म दिया, उसको हर्ष
मिलता ही रहे।

— १७ —

२६ मेरे पुत्र, मुझमें मन लगा और तेरी आँखें
मुझ पर टिकी रहें। मुझे आदर्श मान। २७ क्योंकि
एक वेश्या गहन गर्त होती हैं। और मन मौजी
पत्नी एक संकरा कुँआ। २८ वह घात में रहती है
जैसे कोई डाकू और वह लोगों में विश्वास हीनों
की संख्या बढ़ाती है।

— १८ —

२९-३० कौन विपत्ति में है कौन दु:ख में पड़ा
है कौन झगड़े—टंटों में किसकी शिकायतें हैं
कौन व्यर्थ चकना चूर किसकी आँखें लाल हैं वे
जो निरन्तर दाखमधु पीते रहते हैं और जिसमें
मिश्रित मधु की ललक होती है!

३१ जब दाखमधु लाल हो, और प्यालें में
झिलमिलाती हो और धीरे—धीरे डाली जा रही
हो, उसको ललचायी आँखों से मत देखो। ३२ सर्प
के समान वह डसती, अन्त में जहर भर देती है जैसे
नाग भर देता है।

३३ तेरी आँखों में विचित्र दृष्य तैरने लगेगें,
तेरा मन उल्टी—सीधी बातों में उलझेगा। ३४ तू
ऐसा हो जायेगा, जैसे उफनते सागर पर सो रहा
हो और जैसे मस्तूल की शिखर पर लेटा हो। ३५ तू
कहेगा, "उन्होंने मुझे मारा पर मुझे तो लगा ही
नहीं। उन्होंने मुझे पीटा, पर मुझ को पता ही नहीं।
मुझ से आता नहीं मुझे उठा दो और मुझे पीने को
और दो।"

— १९ —

२४ १ दुष्ट जन से तू कभी मत होड़कर।
उनकी संगत की तू चाहत मत कर।
२ क्योंकि उनके मन हिंसा की योजनाएँ रचते और
उनके होंठ दु:ख देने की बातें करते हैं।

— २० —

३ बुद्धि से घर का निर्माण हो जाता है, और
समझ—बूझ से ही वह स्थिर रहता है। ४ ज्ञान के
द्वारा उसके कक्ष अद्भुत और सुन्दर खजानों से भर
जाते हैं।

— २१ —

५ बुद्धिमान जन में महाशक्ति होती है और
ज्ञानी पुरुष शक्ति को बढ़ाता है। ६ युद्ध लड़ने के
लिये परामर्श चाहिये और विजय पाने को बहुत से
सलाहकार।

— २२ —

७ मूर्ख बुद्धि को नहीं समझता। लोग जब
महत्वपूर्ण बातों की चर्चा करते हैं तो मूर्ख समझ
नहीं पाता।

— २३ —

८ षडयन्त्रकारी वही कहलाता है, जो बुरी
योजनाएँ बनाता रहता है। ९ मूर्ख की योजनायें
पाप बन जाती है और निन्दक जन को लोग छोड़
जाते हैं।

— २४ —

१० यदि तू विपत्ति में हिम्मत छोड़ बैठेगा, तो
तेरी शक्ति कितनी थोड़ी सी है।

— २५ —

११ यदि किसी की हत्या का कोई षडयन्त्र रचे
तो उसको बचाने का तुझे यत्न करना चाहिये।
१२ तू ऐसा नहीं कह सकता, "मुझे इससे क्या
लेना।" यहोवा जानता है सब कुछ और यह भी
वह जानता है किस लिये तू काम करता है यहोवा
तुझको देखता रहता है। तेरे भीतर की जानता है
और वह तुझको यहोवा तेरे कर्मो का प्रतिदान
देगा।

— २६ —

१३ हे मेरे पुत्र, तू शहद खाया कर क्योंकि यह
उत्तम है। यह तुझे मीठा लगेगा। १४ इसी तरह यह
भी तू जान ले कि आत्मा को तेरी बुद्धि मीठी
लगेगी, यदि तू इसे प्राप्त करे तो उसमें निहित है
तेरी भविष्य की आशा और वह तेरी आशा कभी
भंग नहीं होगी।

— २७ —

१५ धर्मी मनुष्य के घर के विरोध में लुटेरे के
समान घात में मत बैठ और उसके निवास पर मत
छापा मार। १६ क्योंकि एक नेक चाहे सात बार
गिरे, फिर भी उठ बैठेगा। किन्तु दुष्ट जन विपत्ति
में डूब जाता है।

— २८ —

१७ शत्रु के पतन पर आनन्द मत कर। जब उसे
ठोकर लगे, तो अपना मन प्रसन्न मत होने दे।
१८ यदि तू ऐसा करेगा, तो यहोवा देखेगा और वह
यहोवा की आँखों में आ जायेगा एवं वह तुझसे
प्रसन्न नहीं रहेगा। फिर सम्भव है कि वह तेरे
उस शत्रु की ही सहायता करे।

— २९ —

१९ तू दुर्जनों के साथ कभी ईर्ष्या मत रख,
कहीं तुझे उनके संग विवाद न करना पड़ जाये।
२० क्योंकि दुष्ट जन का कोई भविष्य नहीं है। दुष्ट
जन का दीप बुझा दिया जायेगा।

— ३० —

२१ हे मेरे पुत्र, यहोवा का भय मान और
विद्रोहियों के साथ कभी मत मिल। २२ क्योंकि
वे दोनों अचानक नाश ढाह देंगे उन पर; और कौन
जानता है कितनी भयानक विपत्तियाँ वे भेज दें।

कुछ अन्य सूक्तियाँ

२३ ये सूक्तियाँ भी बुद्धिमान जनों की है : न्याय
में पक्षपात करना उचित नहीं है। २४ ऐसा जन जो
अपराधी से कहता है, "तू निरपराध है" लोग उसे
कोसेंगे और जातियाँ त्याग देंगी। २५ किन्तु जो
अपराधी को दण्ड देंगे, सभी जन उनसे हर्षित रहेंगे
और उनपर आशीर्वाद की वर्षा होगी।
२६ निर्मल उत्तर से मन प्रसन्न होता है, जैसे
अधरों पर चुम्बन अंकित कर दे।
२७ पहले बाहर खेतों का काम पूरा कर लो इसके
बाद में तुम अपना घर बनाओ।
२८ अपने पड़ोसी के विरुद्ध बिना किसी कारण
साक्षी मत दो। अथवा तुम अपनी वाणी का किसी
को छलने में मत प्रयोग करो।
२९ मत कहे ऐसा, "उसके साथ मैं भी ठीक वैसा
ही करूँगा, मेरे साथ जैसा उसने किया है ; मैं उसके
साथ जैसे को तैसा करूँगा।"
३० मैं आलसी के खेत से होते हुए गुजरा जो
अंगूर के बाग के निकट था जो किसी ऐसे मनुष्य
का था, जिसको उचित—अनुचित का बोध नहीं
था। ३१ कंटीली झाड़ियाँ निकल आयीं थी हर कहीं
खरपतवार से खेत ढक गया था। और बाड़ पत्थर
की खंडहर हो रही थी। ३२ जो कुछ मैंने देखा,
उस पर मन लगा कर सोचने लगा। जो कुछ मैंने
देखा, उससे मुझको एक सीख मिली। ३३ जरा एक
झपकी, और थोड़ी सी नींद, थोड़ा सा सुस्ताना,
धर कर हाथों पर हाथ। (दरिद्रता को बुलाना है)
३४ वह तुझ पर टूट पड़ेगी जैसे कोई लुटेरा टूट
पड़ता है, और अभाव तुझ पर टूट पड़ेगा जैसे
कोई शस्त्र धारी टूट पड़ता है।

सुलैमान की कुछ और सूक्तियाँ

२५ १ सुलैमान की ये कुछ अन्य सूक्तियाँ
हैं जिनका प्रतिलेख यहूदा के राजा
हिजकिय्याह के लोगों ने तैयार किया था :
२ किसी विषय—वस्तु को रहस्यपूर्ण रखने में
परमेश्वर की गरिमा है किन्तु किसी बात को ढूँढ
निकालने में राजा की महिमा है।

३ जैसे ऊपर अन्तहीन आकाश है और नीचे
अटल धरती है, वैसे ही राजाओं के मन होते
हैं जिनके ओर—छोर का कोई अता पता नहीं।
उसकी थाह लेना कठिन है।
४ जैसे चाँदी से खोट का दूर करना, सुनार को
उपयोगी होता है, ५ वैसे ही राजा के सामने से
दुष्ट को दूर करना नेकी उसके सिंहासन को अटल
करता है।
६ राजा के सामने अपने बड़ाई मत बखानो और
महापुरुषों के बीच स्थान मत चाहो। ७ उत्तम वह
है जो तुझसे कहे, "आ यहाँ, आ जा" अपेक्षा इसके
कि कुलीन जन के समक्ष वह तेरा निरादर करें।
८ तू किसी को जल्दी में कचहरी मत घसीट।
क्योंकि अंत में वह लज्जित करें तो तू क्या कहेगा
९ यदि तू अपने पड़ोसी के संग में किसी बात पर
विवाद करे, तो किसी जन का विश्वास जो तुझमें
निहित है, उसको तू मत तोड़। १० ऐसा न हो जाये
कहीं तेरी जो सुनता हो, लज्जित तुझे ही करे।
और तू ऐसे अपयश का भागी बने जिसका अंत न
हो।
११ अवसर पर बोला वचन होता है ऐसा जैसा
हों चाँदी में स्वर्णिम सेब जड़े हुए। १२ जो कान
बुद्धिमान की झिड़की सुनता है, वह उसके कान
के लिये सोने की बाली या कुन्दन की आभूषण बन
जाता है।
१३ एक विश्वास योग्य दूत, जो उसे भेजते हैं
उनके लिये कटनी के समय की शीतल बयार सा
होता है हृदय में निज स्वामियों के वह स्फूर्ती भर
देता है।
१४ वह मनुष्य वर्षा रहित पवन और रीतें मेघों
सा होता है, जो बड़ी—बड़ी कोरी बातें देने की
बनाता है ; किन्तु नहीं देता है।
१५ धैर्यपूर्ण बातों से राजा तक मनाये जाते और
नम्र वाणी हड्डी तक तोड़ सकती हैं।
१६ यद्यपि शहद बहुत उत्तम है, पर तू बहुत
अधिक मत खा और यदि तू अधिक खायेगा, तो
उल्टी आ जायेगी और रोगी हो जायेगा। १७ वैसे
ही तू पड़ोसी के घर में बार—बार पैर मत रख।
अधिक आना जाना निरादर करता है।
१८ वह मनुष्य, जो झूठी साक्षी अपने साथी के
विरोध में देता है वह तो है हथौड़ा सा अथवा
तलवार सा या तीखे बाण सा। १९ विपत्ति के काल
में भरोसा विश्वास—घाती पर होता है ऐसा जैसे
दुःख देता दाँत अथवा लँगड़ाते पैर।
२० जो कोई उसके सामने खुशी के गीत गाता है
जिसका मन भारी है। वह उसको वैसा लगता है
जैसे जोड़े में कोई कपड़े उतार लेता अथवा कोई
फोड़े के सफफ पर सिरका उंडेला हो।
२१ यदि तेरा शत्रु भी कभी भूखा हो, उसके खाने
के लिये, तू भोजन दे दे, और यदि वह प्यासा हो,
तू उसके लिये पानी पीने को दे दे। २२ यदि तू ऐसा
करेगा वह लज्जित होगा, वह लज्जा उसके चिंतन
में अंगारों सी धधकेगी, और यहोवा तुझे उसका
प्रतिफल देगा।
२३ उत्तर का पवन जैसे वर्षा लाता है वैसे ही
धूर्त—वाणी क्रोध उपजाती है।
२४ झगड़ालू पत्नी के साथ घर में रहने से छत
के किसी कोने पर रहना उत्तम है।
२५ किसी दूर देश से आई कोई अच्छी खबर
ऐसी लगती है जैसे थके मांदे प्यासे को शीतल
जल।
२६ गाद भरे झरने अथवा किसी दूषित कुँए सा
होता वह धर्मी पुरूष जो किसी दुष्ट के आगे झुक
जाता है।
२७ जैसे बहुत अधिक शहद खाना अच्छा नहीं
वैसे अपना मान बढ़ाने का यत्न करना अच्छा नहीं
है।
२८ ऐसा जन जिसको स्वयं पर नियन्त्रण नहीं,
वह उस नगर जैसा है, जिसका परकोटा ढह कर
बिखर गया हो।

मूर्खो के सम्बंध में विवेकपूर्ण सूक्तियाँ

२६ १ जैसे असंभव है बर्फ का गर्मी में पड़ना
और जैसे वांछित नहीं है कटनी के वक्त
पर वर्षा का आना वैसे ही मूर्ख को मान देना
अर्थहीन है।
२ यदि तूने किसी का कुछ भी बिगाड़ा नहीं
और तुझको वह शाप दे, तो वह शाप व्यर्थ ही
रहेगा। उसका शाप पूर्ण वचन तेरे ऊपर से यूँ उड़
निकल जायेगा जैसे चंचल चिड़िया जो टिककर
नहीं बैठती।
३ घोड़े को चाबुक सधाना पड़ता है। और खच्चर
को लगाम से। ऐसे ही तुम मूर्ख को डंडे से
सधाओ।
४-५ मूर्ख को उत्तर मत दो नहीं तो तुम भी
स्वयं मूर्ख से दिखोगे। मूर्ख की मूर्खता का तुम
उचित उत्तर दो, नहीं तो वह अपनी ही आँखों में
बुद्धिमान बन बैठेगा।
६ मूर्ख के हाथों सन्देशा भेजना वैसा ही होता है
जैसे अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारना, या विपत्ति
को बुलाना।

७ बिना समझी युक्ति किसी मूर्ख के मुख पर
ऐसी लगती है, जैसे किसी लंगड़े की लटकती मरी
टाँग।
८ मूर्ख को मान देना वैसा ही होता है जैसे कोई
गुलेल में पत्थर रखना।
९ मूर्ख के मुख में सूक्ति ऐसे होती है जैसे शराबी
के हाथ में काँटेदार झाड़ी हो।
१० किसी मूर्ख को या किसी अनजाने व्यक्ति को
काम पर लगाना खतरनाक हो सकता है। तुम नहीं
जानते कि किसे दु:ख पहुँचेगा।
११ जैसे कोई कुत्ता कुछ खा करके बीमार हो
जाता है और उल्टी करके फिर उसको खाता है वैसे
ही मूर्ख अपनी मूर्खता बार—बार दोहराता है।
१२ वह मनुष्य जो अपने को बुद्धिमान मानता
है, किन्तु होता नहीं है वह तो किसी मूर्ख से भी
बुरा होता है।
१३ आलसी करता रहता है, काम नहीं करने के
बहाने कभी वह कहता है सड़क पर सिंह है।
१४ जैसे अपनी चूल पर चलता रहता किवाड़।
वैसे ही आलसी बिस्तर पर अपने ही करवटें
बदलता है।
१५ आलसी अपना हाथ थाली में डालता है
किन्तु उसका आलस, उसके अपने ही मुँह तक उसे
भोजन नहीं लाने देता।
१६ आलसी मनुष्य, निज को मानता
महाबुद्धिमान! सातों ज्ञानी पुरुषों से भी
बुद्धिमान।
१७ ऐसे पथिक जो दूसरों के झगड़े में टाँग
अड़ाता है जैसे कुत्ते पर काबू पाने के लिये कोई
उसके कान पकड़े।
१८–१९ उस उन्मादी सा जो मशाल उछालता है
या मनुष्य जो घातक तीर फेंकता है वैसे ही वह भी
होता है जो अपने पड़ोसी छलता है और कहता
है—मैं तो बस यूँ ही मजाक कर रहा था।
२० जैसे इन्धन बिना आग बुझ जाती है वैसे ही
कानाफूसी बिना झगड़े मिट जाते हैं।
२१ कोयला अंगारों को और आग की लपट को
लकड़ी जैसे भड़काती है, वैसे ही झगड़ीलू झगड़ों
को भड़काता।
२२ जन परवाद भोजन से स्वादिष्ट लगते हैं। वे
मनुष्य के भीतर उतरते चले जाते हैं।
२३ दुष्ट मन वाले की चिकनी चुपड़ी बातें होती
है ऐसी, जैसे माटी के बर्तन पर चिपके चाँदी के
वर्क। २४ द्वेषपूर्ण व्यक्ति अपने मधुर वाणी में द्वेष
को ढकता है। किन्तु अपने हृदय में वह छल
को पालता है। २५ उसकी मोहक वाणी से उसका
भरोसा मत कर, क्योंकि उसके मन में सात घृणित
बातें भरी हैं। २६ छल से किसी का दुर्भाव चाहे छुप
जाये किन्तु उसकी दुष्टता सभा के बीच उघड़ेगी।
२७ यदि कोई गढ़ा खोदता है किसी के लिये तो
वह स्वयं ही उसमें गिरेगा ; यदि कोई व्यक्ति कोई
पत्थर लुढ़काता है तो वह लुढ़क कर उसी पर
पड़ेगा।
२८ ऐसा व्यक्ति जो झूठ बोलता है, उनसे घृणा
करता है जिनको हानि पहुँचाता और चापलूस
स्वयं का नाश करता।

२७ १ कल के विषय में कोई बड़ा बोल मत
बोलो। कौन जानता है कल क्या कुछ
घटने को है।
२ अपने ही मुँह से अपनी बड़ाई मत करो दूसरों
को तुम्हारी प्रशंसा करने दो।
३ कठिन है पत्थर ढोना, और ढोना रेत का, किन्तु
इन दोनों से कहीं अधिक कठिन है मूर्ख के द्वारा
उपजाया गया कष्ट।
४ क्रोध निर्दय और दर्दम्य होता है। वह नाश
कर देता है। किन्तु ईर्ष्या बहुत ही बुरी है।
५ छिपे हुए प्रेम से, खुली घुड़की उत्तम है।
६ हो सकता है मित्र कभी दु:खी करें, किन्तु
ये उसका लक्षय नहीं है। इससे शत्रु भिन्न है।
वह चाहे तुम पर दया करे किन्तु वह तुम्हें हानि
पहुँचाना चाहता है।
७ पेट भर जाने पर शहद भी नहीं भाता किन्तु
भूख में तो हर चीज भाती है।
८ अपना घर छोड़कर भटकता मनुष्य ऐसा,
जैसे कोई चिड़िया भटकी निज घोंसले से।
९ इत्र और सुगंधित धूप मन को आनन्द से
भरते हैं और मित्र की सच्ची सम्मति से मन
उल्लास से भर जाता है।
१० अपने मित्र को मत भूलो न ही अपने पिता
के मित्र को। और विपत्ति में सहायता के लिये दूर
अपने भाई के घर मत जाओ। दूर के भाई से पास
का पड़ोसी अच्छा है।
११ हे मेरे पुत्र, तू बुद्धिमान बन जा और मेरा
मन आनन्द से भर दे। ताकि मेरे साथ जो घृणा से
व्यवहार करे, मैं उसको उत्तर दे सकूँ।
१२ विपत्ति को आते देखकर बुद्धिमान जन दूर
हट जाते हैं, किन्तु मूर्खजन बिना राह बदले चलते
रहते हैं और फंस जाते हैं।
१३ जो किसी पराये पुरूष का जमानत भरता है
उसे अपने वस्त्र भी खोना पड़ेगा।

१४ ऊँचे स्वर में "सुप्रभात" कह कर के अलख
सवेरे अपने पड़ोसी को जगाया मत कर। वह एक
शाप के रूप में झलेगा आशीर्वाद में नहीं।
१५ झगड़ालू पत्नी होती है ऐसी जैसी दुर्दिन की
निरन्तर वर्षा। १६ रोकना उसको होता है वैसा ही
जैसे कोई रोके पवन को और पकड़े मुट्ठी में तेल
को।
१७ जैसे धार धरता है लोहे से लोहा, वैसी ही
जन एक दूसरे की सीख से सुधरते हैं।
१८ जो कोई अंजीर का पेड़ सींचता है, वह उसका
फल खाता है। वैसे ही जो निज स्वामी की सेवा
करता, वह आदर पा लेता है।
१९ जैसे जल मुखड़े को प्रतिबिम्बित करता है,
वैसे ही हृदय मनुष्य को प्रतिबिम्बित करता है।
२० मृत्यु और महानाश कभी तृप्त नहीं होते और
मनुष्य की आँखें भी तृप्त नहीं होती।
२१ चाँदी और सोने को भट्टी—कुठाली में परख
लिया जाता है। वैसे ही मनुष्य उस प्रशंसा से
परखा जाता है जो वह पाता है।
२२ तू किसी मूर्ख को चूने में पीस—चाहे जितना
महीन करे और उसे पीस कर अनाज सा बना देवे
उसका चूर्ण किन्तु उसकी मूर्खता को, कभी भी
उससे तू दूर न कर पायेगा।
२३ अपने रेवड़ की हालत तू निश्चित जानता
है। अपने रेवड़ की ध्यान से देखभाल कर।
२४ क्योंकि धन दौलत तो टिकाऊ नहीं होते हैं।
यह राजमुकुट पीढ़ी—पीढ़ी तक बना नहीं रहता
है। २५ जब चारा कट जाता है, तो नई घास उग
आती है। वह घास पहाड़ियों पर से फिर इकट्ठी
कर ली जाती है। २६ तब तब ये मेमनें ही तुझे
वस्त्र देंगे और ये बकरियाँ खेतों की खरीद का
मूल्य बनेगीं। २७ तेरे परिवार को, तेरे दास दासियों
को और तेरे अपने लिये भरपूर बकरी का दूध
होगा।

२८ १ दुष्ट के मन में सदा भय समाया रहता
है और इसी कारण वह भागता फिरता है।
किन्तु धर्मी जन सदा निर्भय रहता है वैसे हो जैसे
सिंह निर्भय रहता है।
२ देश में जब अराजकता उभर आती है बहुत
से शासक बन बैठते हैं। किन्तु जो समझता है
और ज्ञानी होता है, ऐसा मनुष्य ही व्यवस्था स्थिर
करता है।
३ वह राजा जो गरीब को दबाता है, वह वर्षा की
बाढ़ सा होता है जो फसल नहीं छोड़ती।
४ व्यवस्था के विधान को जो त्याग देते हैं, दुष्टों
की प्रशंसा करते, किन्तु जो व्यवस्था के विधान
को पालते उनका विरोध करते।
५ दुष्ट जन न्याय को नहीं समझते हैं। किन्तु जो
यहोवा की खोज में रहते हैं, उसे पूरी तरह जानते
हैं।
६ वह निर्धन उत्तम हैं जिसकी राह खरी है। न
कि वह धनी पुरुष जो टेढ़ी चाल चलता है।
७ जो व्यवस्था के विधानों का पालन करता है,
वही है विवेकी पुत्र; किन्तु जो व्यर्थ के पेटुओं को
बनाता साथी, वह पिता का निरादर करता है।
८ वह जो मोटा ब्याज वसूल कर निज धन
बढ़ाता है, वह तो यह धन जोड़ता है किसी ऐसे
दयालु के लिये जो गरीबों पर दया करता है।
९ यदि व्यवस्था के विधान पर कोई कान नहीं
देता तो उसको विनतियाँ भी घृणा के योग्य होगी।
१० वह तो अपने ही जाल में फंस जायेगा जो
सीधे लोगों को बुरे मार्ग पर भटकाता है। किन्तु
दोषरहित लोग उत्तम आशीष पायेंगे।
११ धनी परुष निज आँखों में बुद्धिमान हो
सकता है किन्तु वह गरीबजन जो बुद्धिमान होता
है सत्य को देखता।
१२ सज्जन जब जीतते हैं, तो सब प्रसन्न होते
हैं। किन्तु जब दुष्ट को शक्ति मिल जाती है तो
लोग छिप—छिप कर फिरते हैं।
१३ जो निज पापों पर पर्दा डालता है, वह तो
कभी नहीं फूलता—फलता है किन्तु जो निज
दोषों को स्वीकार करता और त्यागता है, वह दया
पाता है।
१४ धन्य है, वह पुरुष जो यहोवा से सदा डरता
है, किन्तु जो अपना मन कठोर कर लेता है, विपत्ति
में गिरता है।
१५ दुष्ट लोग असहाय जन पर शासन करते हैं।
ऐसे जैसे दहाड़ता हुआ सिंह अथवा झपटता हुआ
रीछ।
१६ एक क्रूर शासक में न्याय को कमी होती है।
किन्तु जो बुरे मार्ग से आये हुए धन से घृणा करता
है, दीर्घ आयु भोगता है।
१७ किसी व्यक्ति को दूसरे की हत्या का दोषी
ठहराया हो तो उस व्यक्ति को शांति नहीं मिलेगी।
उसे सहायता मत कर।
१८ यदि कोई व्यक्ति निष्कलंक हो तो वह
सुरक्षित है। यदि वह बुरा व्यक्ति हो तो वह अपनी
सामर्थ खो बैठेगा।
१९ जो अपनी धरता जोतता—बोता है और
परिश्रम करता है, उसके पास सदा भर पूर खाने

को होगा। किन्तु जो सदा सपनों में खोया रहता है, सदा दरिद्र रहेगा।

२० परमेश्वर निज भक्त पर आशीष बरसाता है, किन्तु वह मनुष्य जो सदा धन पाने को लालायित रहता है, बिना दण्ड के नहीं बचेगा।

२१ किसी धन्यवान व्यक्ति का पक्षपात करना अच्छा नहीं होता तो भी कुछ न्यायाधीश कभी कर जाते पक्षपात मात्र छोटे से रोटी के ग्रास के लिये।

२२ सूम सदा धन पाने को लालायित रहता है और नहीं जानता कि उसकी ताक में दरिद्रता है।

२३ वह जो किसी जन को सुधारने को डांटता है, वह अधिक प्रेम पाता है, अपेक्षा उसके जो चापलूसी करता है।

२४ कुछ लोग होते हैं जो अपने पिता और माता से चुराते हैं। वह कहते हैं, "यह बुरा नहीं है।" यह उस बुरा व्यक्ति जैसा है जो घर के भीतर आकर सभी वस्तुओं को तोड़ फोड़ कर देते हैं।

२५ लालची मनुष्य तो मतभेद भड़काता, किन्तु वह मनुष्य जिसका भरोसा यहोवा पर है फूलेगा—फलेगा।

२६ मूर्ख को अपने पर बहुत भरोसा होता है। किन्तु जो ज्ञान की राह पर चलता है, सुरक्षित रहता है।

२७ जो गरीबों को दान देता रहता है उसको किसी बात का अभाव नहीं रहता। किन्तु जो उनसे आँख मूँद लेता है, वह शाप पाता है।

२८ जब कोई दुष्ट शक्ति पा जाता है तो सज्जन छिप जाने को दूर चले जाते हैं। किन्तु जब दुष्ट जन का विनाश होता है तो सज्जनों को वृद्धि प्रकट होने लगती है।

२९ १ जो घुड़कियाँ खाकर भी अकड़ा रहता है, वह अचानक नष्ट हो जायेगा। उसका उपाय तक नहीं बचेगा।

२ जब धर्मी जन का विकास होता है, तो लोग आनन्द मनाते हैं। जब दुष्ट शासक बन जाता है तो लोग कराहते हैं।

३ ऐसा जन जो विवेक से प्रेम रखता है, पिता को आनन्द पहुँचाता है। किन्तु जो वेश्याओं की संगत करता है, अपना धन खो देता है।

४ न्याय से राजा देश को स्थिरता देता है। किन्तु राजा लालची होता तो लोग उसे घूँस देते है अपना काम करवाने के लिये। तब देश दुर्बल हो जाता है।

५ जो अपने साथी की चापलूसी करता है वह अपने पैरों के लिये जाल पसारता है।

६ पापी स्वयं अपने जाल में फंसता है। किन्तु एक धर्मी गाता और प्रसन्न होता है।

७ सज्जन चाहते हैं कि गरीबों को न्याय मिले किन्तु दुष्टों को उनकी तनिक चिन्ता नहीं होती।

८ जो ऐसा सोचते हैं कि हम दूसरों से उत्तम हैं, वे विपत्ति उपजाते और सारे नगर को अस्त—व्यस्त कर देते हैं। किन्तु जो बुद्धिमान होते हैं, शान्ति को स्थापित करते हैं।

९ बुद्धिमान जन यदि मूर्ख के साथ में वाद—विवाद सुलझाना चाहता है, तब मूर्ख कुतर्क करता है और उल्टी—सीधी बातें करता जिससे दोनों के बीच सन्धि नहीं हो पाती।

१० खून के प्यासे लोग, सच्चे लोगों से घृणा करते हैं। और वे उन्हें मार डालना चाहते हैं।

११ मूर्ख मनुष्य को तो बहुत शीध्र क्रोध आता है। किन्तु बुद्धिमान धीरज धरके अपने पर नियंत्रण रखता है।

१२ यदि एक शासक झूठी बातों को महत्व देता है तो उसके अधिकारी सब भ्रष्ट हो जाते हैं।

१३ एक हिसाब से गरीब और जो व्यक्ति को लूटता है, वह समान है। यहोवा ने ही दोनों को बनाया है।

१४ यदि कोई राजा गरीबों पर न्यायपूर्ण रहता है तो उसका शासन सुदीर्घ काल बना रहेगा।

१५ दण्ड और डाँट से सुबुद्धि मिलती है किन्तु यदि माता—पिता मनचाहा करने को खुला छोड़ दे, तो वह निज माता का लज्जा बनेगा।

१६ दुष्ट के राज्य में पाप, पनप जाते हैं किन्तु अन्तिम विजय तो सज्जन की होती है।

१७ पुत्र को दण्डित कर जब वह अनुचित करे, फिर तो तुझे उस पर सदा ही गर्व रहेगा। वह तेरी लज्जा का कारण कभी नहीं होगा।

१८ यदि कोई देश परमेश्वर की राह पर नहीं चलता तो उस देश में शांति नहीं होगी। वह देश जो परमेश्वर की व्यवस्था पर चलता, आनन्दित रहेगा।

१९ केवल शब्द मात्र से दास नहीं सुधरता है। चाहे वह तेरे बात को समझ ले, किन्तु उसका पालन नहीं करेगा।

२० यदि कोई बिना विचारे हुए बोलता है तो उसके लिये कोई आशा नहीं। अधिक आशा होती है एक मूर्ख के लिये अपेक्षा उस जन के जो विचारे बिना बोले।

२१ यदि तू अपने दास को सदा वह देगा जो भी वह चाहे, तो अंत में— वह तेरा एक उत्तम दास नहीं रहेगा।

२२ क्रोधी मनुष्य मतभेद भड़काता है, और
ऐसा जन जिसको क्रोध आता हो, बहुत से पापों
का अपराधी बनता है।
२३ मनुष्य को अहंकार नीचा दिखाता है, किन्तु
वह व्यक्ति जिसका हृदय विनम्र होता आदर
पाता है।
२४ जो चोर का संग पकड़ता है वह अपने से
शत्रुता करता है ; क्योंकि न्यायालय में जब उस
पर सच उगलने को जोर पड़ता है तो वह कुछ भी
कहने से बहुत डरा रहता है।
२५ भय मनुष्य के लिये फँदा प्रमाणित होता
है, किन्तु जिसकी आस्था यहोवा पर रहती है,
सुरक्षित रहता है।
२६ बहुत लोग राजा के मित्र होना चाहते हैं,
किन्तु वह यहोवा ही है जो जन का सच्चा न्याय
करता है।
२७ सज्जन घृणा करते हैं ऐसे उन लोगों से जो
सच्चे नहीं होते ; और दुष्ट सच्चे लोगों से घृणा
रखते हैं।

याके के पूत्र आगूर की सूक्तियाँ

३० १ ये सूक्ति आगूर की हैं, जो याके का पूत्र
था। यह पुरुष ईतीएल और उक्काल से :
कहता है
२ मैं महाबुद्धिहीन हूँ। मुझमें मनुष्य की
समझदारी बिल्कुल नहीं है। ३ मैंने बुद्धि नहीं
पायी और मेरे पास उस पवित्र का ज्ञान नहीं है।
४ स्वर्ग से कोई नहीं आया और वहाँ के रहस्य ला
सका पवन को मुट्ठी में कोई नहीं बाँध सका।
कोई नहीं बाँध सका पानी को कपड़े में और कोई
नहीं जान सका धरती का छोर। और यदि कोई
इन बातों को कर सका है, तो मुझसे कहो, उसका
नाम और उसके पुत्र का नाम मुझको बता, यदि
तू उसको जानता हो।
५ वचन परमेश्वर का दोष रहित होता है, जो
उसकी शरण में जाते हैं वह उनकी ढाल होता है।
६ तू उसके वचनों में कुछ घट—बढ़ मत कर। नहीं
तो वह तुझे डांटे फटकारेगा और झूठा ठहराएगा।
७ हे यहोवा, मैं तुझसे दो बातें माँगता हूँ : जब
तक मैं जीऊँ, तू मुझको देता रह। ८ तू मुझसे
मिथ्या को, व्यर्थ को दूर रख। मुझे दरिद्र मत
कर और न ही मुझको धनी बना। मुझको बस
प्रतिदिन खाने को देता रह। ९ कहीं ऐसा न हो
जाये बहुत कुछ पा करके मैं तुझको त्याग दूँ ; और
कहने लगूँ "कौन परमेश्वर है" और यदि निर्धन बनूँ
और चोरी करूँ, और इस प्रकार मैं अपने परमेश्वर
के नाम को लजाऊँ।
१० तू स्वामी से सेवक की निन्दा मत कर नहीं
तो तुझको, वह अभिशाप देगा और तुझे उसकी
भरपाई करनी होगी।
११ ऐसे भी होते हैं जो अपने पिता को कोसते है,
और अपनी माता को धन्य नहीं कहते हैं।
१२ होते हैं ऐसे भी, जो अपनी आँखों में तो
पवित्र बने रहते किन्तु अपवित्रता से अपनी
नहीं धुले होते हैं।
१३ ऐसे भी होते हैं जिनकी आँखें सदा तनी ही
रहती, और जिनकी आँखों में घृणा भरी रहती है।
१४ ऐसे भी होते हैं जिनके दाँत कटार हैं और
जिनके जबड़ों में खंजर जड़े रहते हैं जिससे वे इस
धरती के गरीबों को हड़प जायें, और जो मानवों में
से अभावग्रस्त हैं उनको वे निगल लें।
१५ जोंक की दो पुत्र होती हैं वे सदा चिल्लाती
रहती, "देओ, देओ।" तीन वस्तु ऐसी हैं जो तृप्त
कभी न होती और चार ऐसी जो कभी बस नहीं
कहती। १६ कब्र, बांझ—कोख और धरती जो जल
से कभी तृप्त नहीं होती और अग्नि जो कभी बस
नहीं कहती।
१७ जो आँख अपने ही पिता पर हँसती है, और
माँ की बात मानने से घृणा करती है, घाटी के कौवे
उसे नोंच लेंगे और उसको गिद्ध खा जायेंगे।
१८ तीन बातें ऐसी हैं जो मुझे अति विचित्र
लगती, और चौथी ऐसी जिसे मैं समझ नहीं पाता।
१९ आकाश में उड़ते हुए गरूड़ का मार्ग, और लीक
नाग की जो चट्टान पर चला ; और महासागर पर
चलते जहाज़ की राह और उस पुरुष का मार्ग जो
किसी कामिनी के प्रेम में बंधा हो।
२० चरित्रहीन स्त्री की ऐसी गति होती है, वह
खाती रहती और अपना मुख पोंछ लेती और कहा
करती है, मैंने तो कुछ भी बुरा नहीं किया।
२१ तीन बातें ऐसी हैं जिनसे धरा काँपती है और
एक चौथी है जिसे वह सह नहीं कर पाती। २२ दास
जो बन जाता राजा, मूर्ख जो सम्पन्न, २३ ब्याह
किसी ऐसी से जिससे प्रेम नहीं हो ; और ऐसी
दासी जो स्वामिनी का स्थान ले ले।
२४ चार जीव धरती के, जो यद्यपि बहुत क्षुद्र
हैं किन्तु उनमें अत्याधिक विवेक भरा हुआ है।
२५ चीटियाँ जिनमें शक्ति नहीं होती है फिर भी वे
गर्मी में अपना खाना बटोरती हैं;
२६ बिज्जू दुर्बल प्राणी हैं फिर भी वे खड़ी चट्टानों
में घर बनाते ;

२७ टिड्डियों का कोई भी राजा नहीं होता है फिर
भी वे पंक्ति बाँध कर एक साथ आगे बढ़ती हैं।
२८ और वह छिपकली जो बस केवल हाथ से ही
पकड़ी जा सकती है, फिर भी वह राजा के महलों
में पायी जाती।
२९ तीन प्राणी ऐसे हैं जो लगते महत्वपूर्ण जब
वे चलते हैं, दरअसल वे चार हैं:
३० एक सिंह, जो सभी पशुओं में शक्तिशाली होता
है, जो कभी किसी से नहीं डरता ;
३१ गर्वीली चाल से चलता हुआ मुर्गा
और एक बकरा
और वह राजा जो अपनी सेना के मध्य है।
३२ तूने यदि कभी कोई मूर्खता का आचरण किया
हो, और अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बना हो अथवा
तूने कभी कुचक्र रचा हो तो तू अपना मुँह अपने
हाथों से ढक ले।
३३ जैसे मथने से दूध मक्खन निकालता है और
नाक मरोड़ने से लहू निकल आता है वैसे ही क्रोध
जगाना झगड़ों का भड़काना होता है।

राजा लमुएल की सूक्तियाँ

३१ १ ये सूक्तियाँ राजा लमूएल की, जिन्हें उसे
उसकी माता ने सिखाया था।
२ तू मेरा पुत्र है वह पुत्र जो मुझ को प्यारा
है। जिसके पाने को मैंने मन्नत मानी थी। ३ तू
व्यर्थ अपनी शक्ति स्त्रियों पर मत व्यय करो
स्त्री ही राजाओं का विनाश करती हैं। इसलिये
तू उन पर अपना क्षय मत कर। ४ हे लमूएल!
राजा को मधुपान शोभा नहीं देता, और न ही यह
कि शासक को यवसुरा ललचाये। ५ नहीं तो, वे
मदिरा का बहुत अधिक पान करके, विधान की
व्यवस्था को भूल जायेगें और वे सारे दीन दलितों
के अधिकारों को छीन लेंगे। ६ वे जो मिटे जा रहे
हैं उन्हें यवसुरा, मदिरा उनको दे जिन पर दारूण
दु:ख पड़ा हो। ७ उनको पीने दे और उन्हें उनके
अभावों को भूलने दे। उनका वह दारूण दु:ख उन्हें
नहीं याद रहे।
८ तू बोल उनके लिये जो कभी भी अपने लिये
बोल नहीं पाते हैं; और उन सब के, अधिकारों के
लिये बोल जो अभागे हैं। ९ तू डट करके खड़ा रह
उन बातों के हेतू जिनको तू जानता है कि वे उचित,
न्यायपूर्ण, और बिना पक्ष—पात के सबका न्याय
कर। तू गरीब जन के अधिकारों की रक्षा कर और
उन लोगों के जिनको तेरी अपेक्षा हो।

आदर्श पत्नी

१० गुणवंती पत्नी कौन पा सकता है
वह जो मणि—मणिकों से कहीं अधिक मूल्यवान।
११ जिसका पति उसका विश्वास कर सकता है।
वह तो कभी भी गरीब नहीं होगा।
१२ सद्पत्नी पति के संग उत्तम व्यवहार करती।
अपने जीवन भर वह उसके लिये कभी विपत्ति नहीं
उपजाती।
१३ वह सदा ऊनी और सूती कपड़े बुनाने में व्यस्त
रहती।
१४ वह जलयान जो दूर देश से आता है
वह हर कहीं से घर पर भोज्य वस्तु लाती।
१५ तड़के उठाकर वह भोजन पकाती है।
अपने परिवार का और दासियों का भाग उनको
देती है।
१६ वह देखकर एवं परख कर खेत मोल लेती है
जोड़े धन से वह दाख की बारी लगाती है।
१७ वह बड़ा श्रम करती है।
वह अपने सभी काम करने को समर्थ है।
१८ जब भी वह अपनी बनायी वस्तु बेचती है, तो
लाभ ही कमाती है।
वह देर रात तक काम करती है।
१९ वह सूत कातती
और निज वस्तु बुनती है।
२० वह सदा ही दीन—दु:खी को दान देती है,
और अभाव ग्रस्त जन की सहायता करती है।
२१ जब शीत पड़ती तो वह अपने परिवार हेतु
चिंतित नहीं होती है।
क्योंकि उसने सभी को उत्तम गर्म वस्त्र दे रख है।
२२ वह चादर बनाती है और गद्दी पर फैलाती है।
वह सन से बने कपड़े पहनती है।
२३ लोग उसके पति का आदर करते हैं
वह स्थान पाता है नगर प्रमुखों के बीच।
२४ वह अति उत्तम व्यापारी बनती है।
वह वस्त्रों और कमरबंदों को बनाकर के उन्हें
व्यापारी लोगों को बेचती है।
२५ वह शक्तिशाली है,
और लोग उसको मान देते हैं।
२६ जब वह बोलती है, वह विवेकपूर्ण रहती है।
उसकी जीभ पर उत्तम शिक्षायें सदा रहती है।
२७ वह कभी भी आलस नहीं करती है
और अपने घर बार का ध्यान रखती है।
२८ उसके बच्चे खड़े होते और उसे आदर देते हैं।
उसका पति उसकी प्रशंसा करता है।

२९ उसका पति कहता है, “बहुत सी स्त्रियाँ होती
हैं।
किन्तु उन सब में तू ही सर्वोत्तम अच्छी पत्नी है।”
३० मिथ्या आकर्षण और सुन्दरता दो पल की है,
किन्तु वह स्त्री जिसे यहोवा का भय है, प्रशंसा
पायेगी।
३१ उसे वह प्रतिफल मिलना चाहिये जिसके वह
योग्य है, और जो काम उसने किये हैं,
उसके लिये चाहिये कि सारे लोग के बीच में उसकी
प्रशंसा करें।